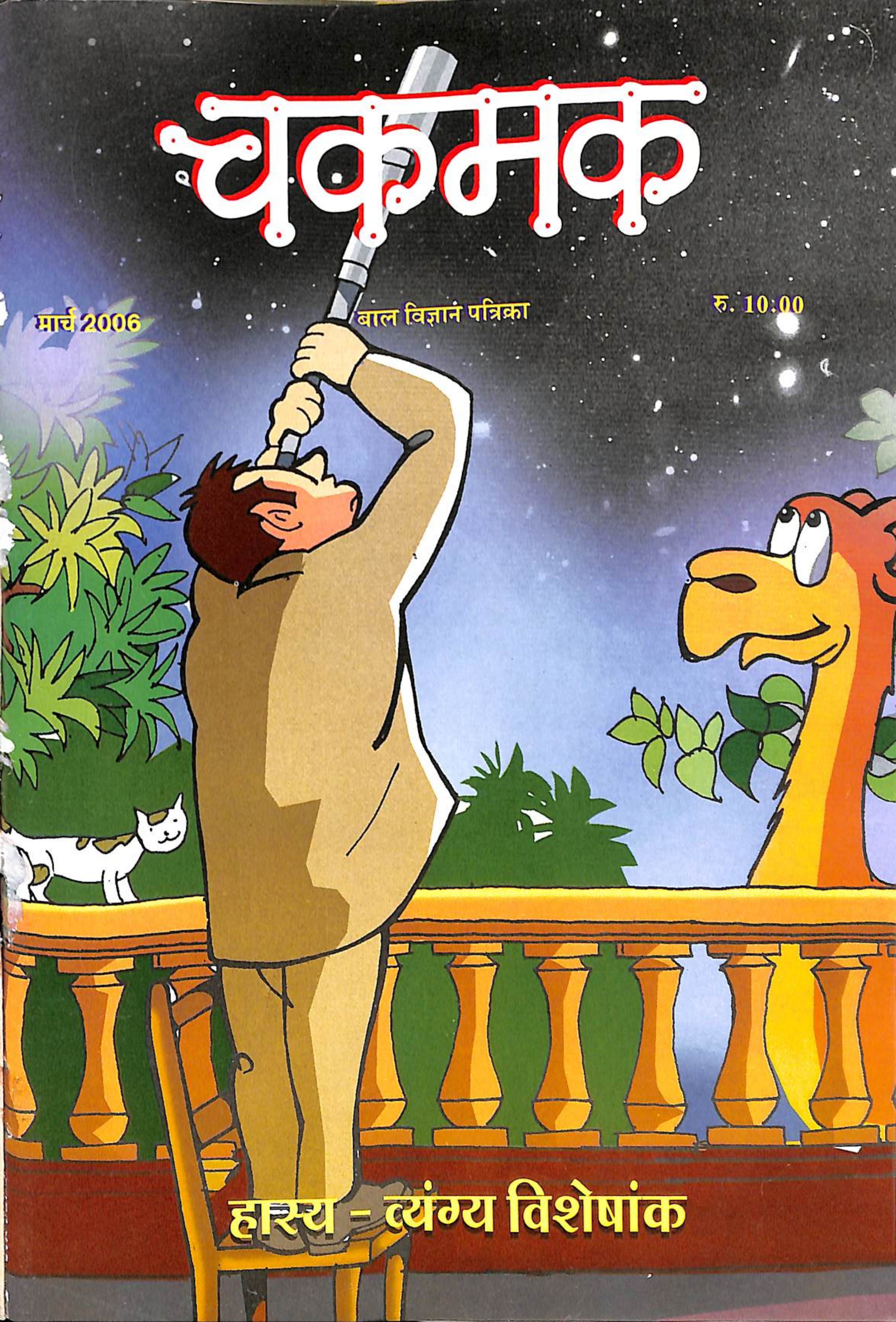
चकमक

मार्च 2006

बाल विज्ञान पत्रिका

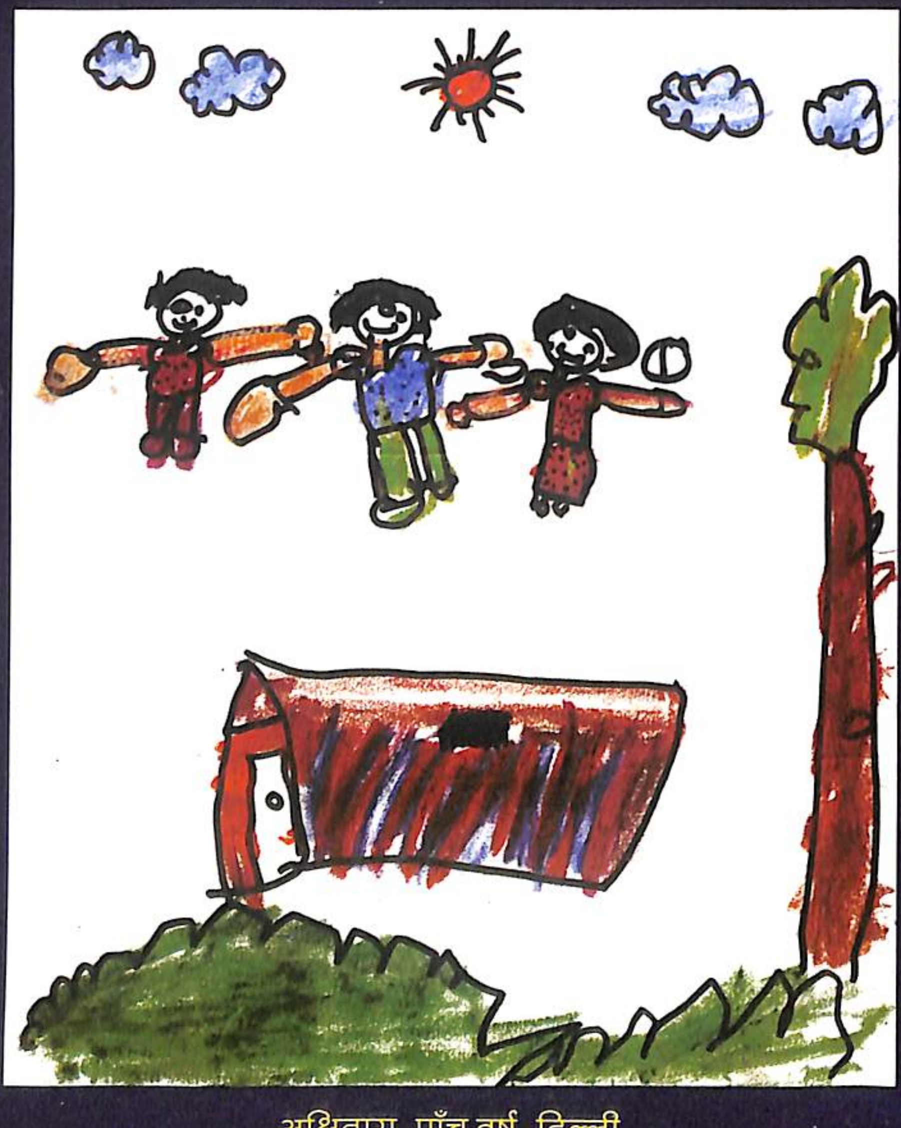
रु. 10:00



हास्य - व्यंग्य विशेषांक



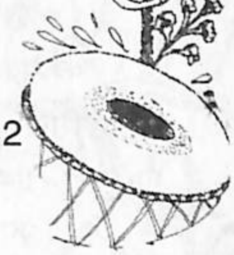
नीलेश उहार, बछवाड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.



अक्षितारा, पाँच वर्ष, दिल्ली



क्या क्या है इस अंक में





आवरण : गौतम चक्रवर्ती



अपनी बात...

दोस्तो,

परीक्षा के दिन आ गये। और साथ ही आ गया होली का मौसम। कई बार तो ऐसा होता है कि परीक्षाओं के बीच में ही होली पड़ जाती है। बच्चे होली का ज़रा भी मज़ा नहीं ले पाते। परीक्षा कब हों, किस तरह हों इस पर सारी दुनिया में विचार चल रहा है। इसी साल से केन्द्रीय विद्यालय की बोर्ड की परीक्षाओं में प्रश्नपत्र पढ़ने के लिए पन्द्रह मिनिट का अतिरिक्त समय देने का चलन शुरू हुआ है। खबर है कि छात्रों द्वारा इसे बहुत पसन्द किया गया है।

जिसने साल भर पढ़ाई की है, लिखने का अभ्यास किया है, उसके लिए परीक्षा ज़्यादा तनाव का कारण नहीं हो सकती। बस, जो पढ़ा है उसे एक बार अच्छी तरह दोहरा लो, अपना विश्वास बनाए रखो और खुश रहो। हो गया।

इसी कारण तुम्हारे मन को प्रसन्न और दिमाग को तरोताज़ा रखने के लिए इस बार हमने चकमक का हास्य-व्यंग्य विशेषांक निकालने का निश्चय किया। आशा है यह अंक तुम्हें खूब पसन्द आएगा।

एक बात और।

ज़रा बाहर निकलकर देखो, कितने फूल खिलते हैं इस मौसम में पेड़ों पर!

पहले पीले-पीले झुमकों वाले अमलतास फिर लाल-बैंगनी कचनार फिर मानो जंगल को दहकाते पलाश और फिर सारे वृक्ष पर छा जाने वाले गुलमोहर के फूल!

कोई चित्र बनाना न भी जानता हो, तो भी उसका मन करे कि रंग और ब्रश मिल जाए तो इनके चित्र बनाऊँ।

धरती कितनी सुन्दर है न!

तुम्हारा

स्वयं प्रकाश

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 21, अंक-8, मार्च 2006

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोना
स्वयं प्रकाश
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

सज्जा
राकेश खत्री

वितरण
कमल सिंह
अनिल लोखण्डे
मनोज निगम

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/एचआईजी-453,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)

फोन - 2463380

eklavyamp@mantrafreenet.com

चंदे की दरें

एक प्रति	:	10.00 रुपए
छमाही	:	50.00 रुपए
वार्षिक	:	100.00 रुपए
दो साल	:	180.00 रुपए
आजीवन	:	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चैक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चैक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।



होली होली होली

गिरिजा कुलश्रेष्ठ

सुबह शाम सिन्दूरी हो लीं
होली होली होली
आँगन धूप झाँक कर बोली
होली होली होली

थिरक खिलीं कचनारी कलियाँ
चीं चीं ... चूँ चूँ गाएँ चिड़ियाँ
हुल्लड़ करे फागुनी टोली
होली होली होली

हवा झूमती-सी लहराती
झूम झटक पेड़ों को जाती
उसके पास गुलाल न रोली
होली होली होली

सरसों को रंग दिया बसंती
लाल, जामुनी रंगी सेवंती
टेसू ने केसर जो घोली
होली होली होली

जी भर बौराई अमराई
बेरों ने खुशबू फैलाई
है शहतूत शहद की गोली
होली होली होली

बगुला जी रंगों से बचने
नदी किनारे पहुँचे छिपने
दे पिचकारी मछली बोली
होली होली होली

छुप ना कोयल बाहर आ री
तुझ पर रंग चढ़ेगा क्या री
कर ले खुलकर हँसी ठिठोली
होली होली होली





चित्र- विवेक वर्मा

जीना इसी का नाम है...

व्यंग्य चित्र - गौतम चक्रवर्ती





चोर- बताओ, सोना कहाँ है?

सरदार- अरे भाई, इसमें पिस्तौल दिखाने की कौन-सी बात है! पूरा घर खाली पड़ा है, कहीं भी सो जाओ।

अध्यापक- भारत के संविधान पर हस्ताक्षर कहाँ किए गए थे?

पप्पू- नीचे ही नीचे।



तीन मरीज़ एक मनोचिकित्सक के पास पहुँचे।

मनोचिकित्सक- (पहले से) 3 + 3 + 3 कितने होते हैं?

पहला मरीज़- 227

मनोचिकित्सक- (दूसरे से) 3 + 3 + 3 कितने होते हैं?

दूसरा मरीज़- मंगलवार

मनोचिकित्सक- (तीसरे से) 3 + 3 + 3 कितने होते हैं?

तीसरा मरीज़- नौ

मनोचिकित्सक- अरे वाह! तुम तो बिल्कुल ठीक हो। बताओ यह हिसाब तुमने कैसे लगाया?

तीसरा मरीज़- इसमें क्या मुश्किल है? 227 में से मंगलवार घटाओ तो नौ ही तो बचेंगे।

टिन्नू- मम्मी हमारी टीचर को कुछ नहीं आता।
मम्मी- क्यों?
टिन्नू- हर सवाल का जवाब बच्चों से पूछती हैं।

पत्रकार- अम्माजी! इस गाँव में कोई बड़ा आदमी पैदा हुआ था?
अम्माजी- नहीं बेटा! हमारे गाँव में तो सिर्फ बच्चे ही पैदा हुए हैं।

अध्यापक- बच्चो! नील आर्मस्ट्राँग ने चन्द्रमा पर पहला कदम रखा था। कोई बता सकता है कि इसके बाद उन्होंने क्या किया था?
एक छात्र- फिर दूसरा कदम भी रख दिया होगा।



डॉक्टर- तुमने रोगी का टेम्प्रेचर लिया क्या?
नर्स- नहीं तो, क्यों? मिल नहीं रहा है क्या?

कमला- यह आम का पेड़ बोल पाता तो कितना मज़ा आता।
विमला- सचमुच! सबसे पहले तो ये तुझसे ही कहता कि मैं आम का नहीं, जामुन का पेड़ हूँ।



रमेश की मम्मी- रमेश बता रहा था कि कल उसे टेस्ट में सौ अंक मिले। क्या सच?
अध्यापिका- हाँ, लेकिन पाँच विषयों में मिलाकर।

चुटकुले

1

डॉक्टर– कहिये, क्या हाल है?

मरीज़- साहब बुखार तो टूट गया अब पैर में दर्द होता है।

डॉक्टर– चिन्ता मत करो, वह भी टूट जाएगा।

2

अध्यापक– (किंशुक से) न तुम्हें अंग्रेज़ी आती है और न हिन्दी, आखिर तुम्हें आता क्या है?

किंशुक- इन विषयों का नाम सुनकर पसीना आता है।

3

अध्यापक– कौशल, तुम्हारे अक्षर कितने खराब हैं। समझ में नहीं आता तुम बड़े होकर क्या बनोगे।

कौशल- सर टाइपराइटर बनूँगा।

4

आदमी– तुम कहाँ तक पढ़े हो?

लड़का- जी B.A.

आदमी– तुम पूरी ज़िन्दगी दो शब्द पढ़े! वो भी उल्टे!

- कृतिका धूत, नवीं, उज्जैन, म.प्र.



बालभवन दिल्ली द्वारा आयोजित कार्यशाला में बच्चों द्वारा मिलकर गढ़ी गई एक कविता

भारी बस्ता हालत खस्ता

नई किताबें कॉपी बस्ता,
पाकर है हर बच्चा हँसता।
पर जब ढोना पड़ता बस्ता,
हो जाती है हालत खस्ता।

टीचर कहती कॉपी लाओ,
बिना किताबों के मत आओ।
आज पढ़ाया जो भी मैंने,
कल तुम उसको लिखकर लाओ।

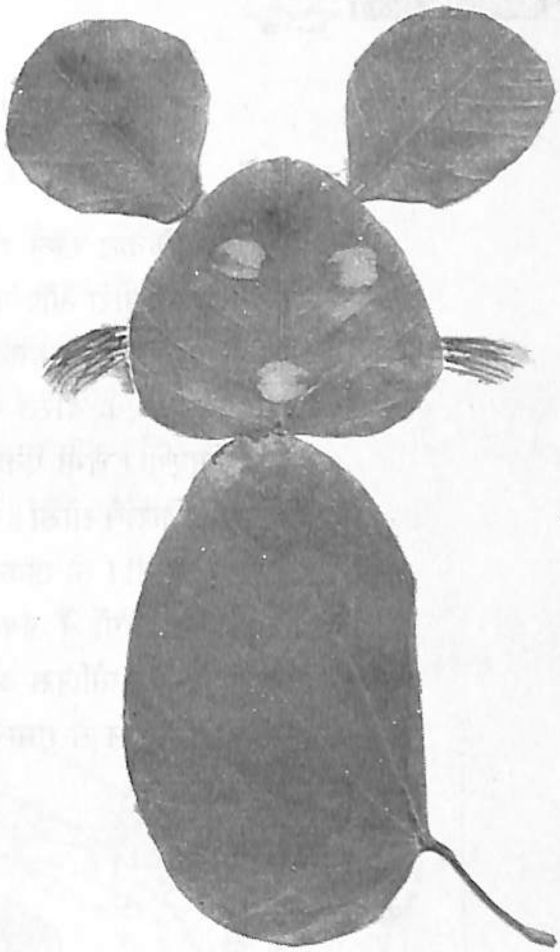
फिर हो जाता भारी बस्ता,
हो जाती है हालत खस्ता।

घर के गलियारे से बस तक,
जाने वाला, तंग है रस्ता।
या तो केवल हम जा सकते,
या फिर जाए भारी बस्ता।

जब-जब अपना बस्ता फँसता,
हो जाती है हालत खस्ता।

पीठ हमारी झुक जाती है,
भारी बस्ता ढोते-ढोते।
बस्ता है या बोझ गधे का?
पूछें कंधे रोते-रोते!

जब भी पाँव ज़मीं पर धँसता।
हो जाती है हालत खस्ता।।



- पूजा जनोरिया, पाँचवीं, भोपाल, म.प्र.

(पत्ती से बने चित्र)



- संध्या, आठवीं, भोपाल, म.प्र.

खिड़की टूटी

हम जब क्रिकेट खेल रहे थे तो मेरे एक दोस्त ने जोर से एक छक्का मारा और वह बॉल पड़ोस की खिड़की से टकरा गई और खिड़की टूट गई। हम बच्चे लोग डर गये। हमारे एक दोस्त ने कहा- मत घबराओ जो होगा देखा जाएगा। तभी एक अंकल ने हमसे कहा कि यह खिड़की किसने तोड़ी। मेरे दोस्त ने कहा- मैंने यह खिड़की तोड़ी। तो अंकल ने हमारे बैट और बॉल ले लिए। हम लोगों ने अंकल से कहा- हमारे बैट और बॉल वापस दे दो। पोलिस अंकल! हमारे बैट और बॉल दे दीजिए। अंकल ने हमारे बैट और बॉल दे दिए।

- साई कुमार खम्ब्रा, चौथी, भोपाल, म.प्र.

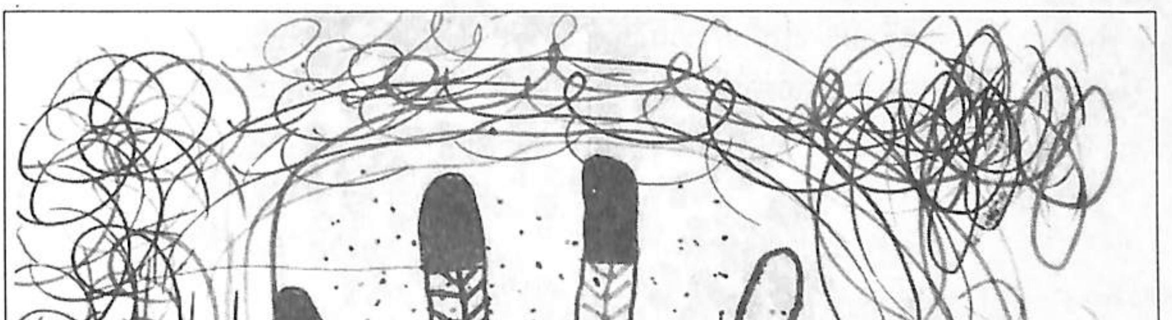


अमन सिहाग, पहली,

पक्की दोस्ती

एक बार की बात है। मैं अपने दोस्तों के साथ स्कूल में हाथ धोने गई। मेरे दोस्तों ने हाथ धो लिए। फिर उन्होंने कहा कि अपन एक बार फिसलपट्टी पर फिसल कर चलते हैं। जब वे फिसल गये तब मैं चढ़ रही थी। जब मैं जैसे ही ऊपर चढ़ी तो मैं गिर गई। फिर मुझे थोड़ा-सा रोना आया। और अपने दोस्तों का नाम लेकर चिल्लाया कि मेरे लिए रुक जाओ। पर मेरे दोस्त चले गये। मुझे अच्छा नहीं लगा। पर तब भी मैं उनकी दोस्त रही।

- मेहर, दूसरी, भोपाल, म.प्र.

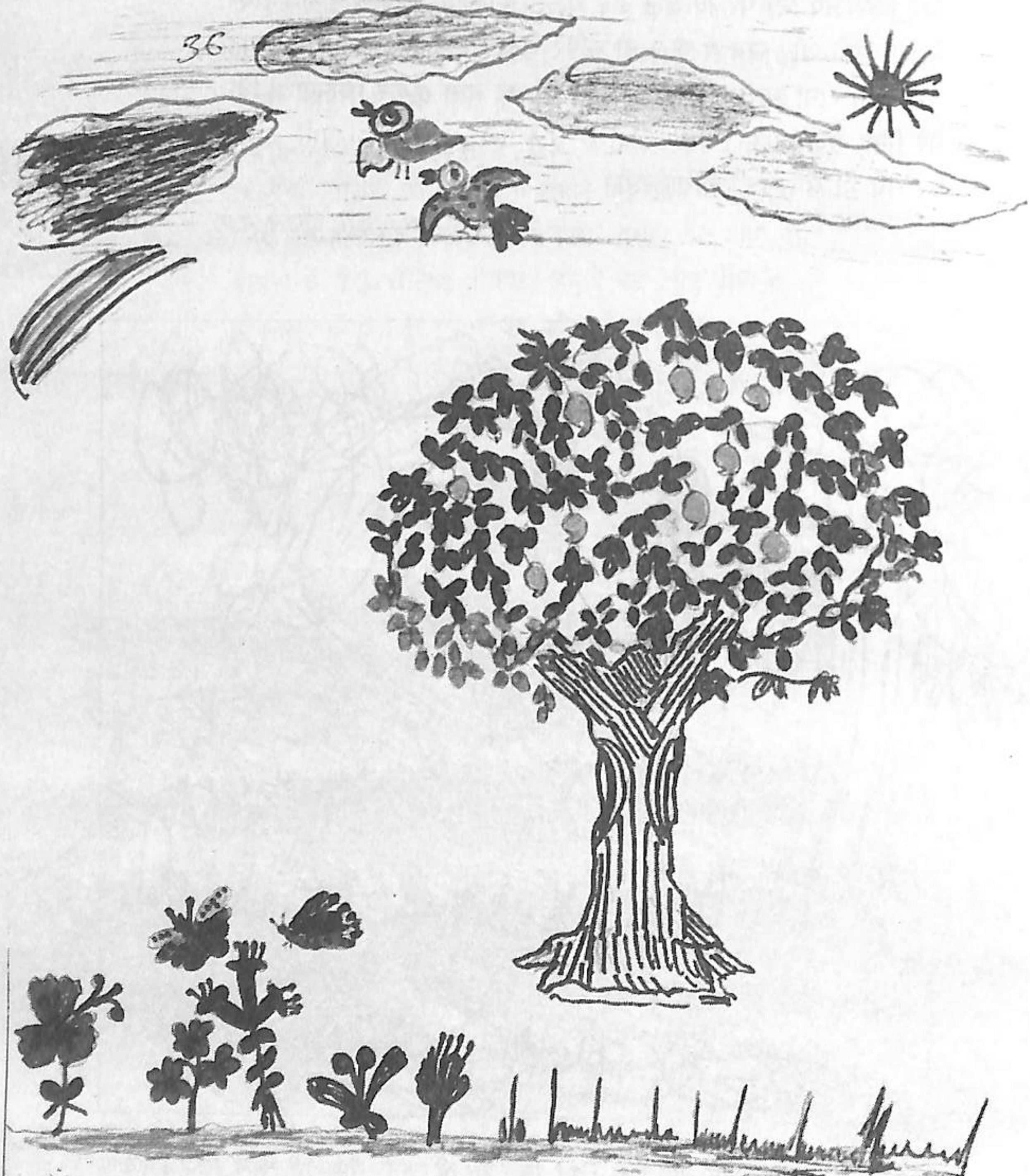


-रेमन, मंजू, पूजा, चौथी, गर्ल्स एस.सी.एस.ए. सैकण्डरी स्कूल, जिंद, हरियाणा

खेल-खेल में

क्रिकेट के खेल में हमें बहुत मज़ा आया। पर खेलते-खेलते मेरी सहेली जैसे ही रन बनाने को दौड़ी- तो वह गिर पड़ी और उसके पैर में ज़ोर से लगी। उसका नाम सुभाना था।

-शुमायला खान, चौथी, भोपाल, म.प्र.



- अनुकृति परसप, (पता नहीं लिखा)

हँसाने वाली गैस

रैक्स डी रोज़ारियो

जब किसी को हँसाना हो तो तुम क्या करते हो? उसे गुदगुदी करते हो? या उसे कोई चुटकुला सुनाते हो? किसी को हँसाने का एक तरीका और है? ज़रा हिन्दी फिल्मों के होली वाले दृश्यों को याद करो। हर कोई नाच रहा है, गा रहा है, खूब हँसी ठट्ठा और धमाल! यह भी याद आएगा कि उनमें से कई गिलास भर-भर के ठण्डाई पी रहे हैं। यही है मौज-मस्ती का रहस्य! ठण्डाई में भाँग मिली रहती है। भाँग एक पौधे की पत्तियाँ होती हैं जिन्हें बारीक पीसकर गोला बनाकर गटक लिया जाता है। या फिर दूध-शक्कर, बादाम, खसखस-सौंफ-काली मिर्च वगैरह से बनने वाली ठण्डाई के साथ घोट लिया जाता है।

भाँग का एक असर यह होता है कि भाँग पीने के बाद कोई हँसता है तो हँसता चला जाता है। फिर उसकी हँसी रोके नहीं रुकती।

एक और चीज़ है जो तुम्हें हँसा सकती है। यह है "नाइट्रस ऑक्साइड" नाम की गैस (या डाइनाइट्रोजन ऑक्साइड या डाइनाइट्रोजन मोनोऑक्साइड) आमतौर पर इसे "लाफिंग गैस" ही कहा जाता है क्योंकि इसे सूँघते ही आदमी बेतहाशा हँसना शुरू कर देता है।

नाइट्रस ऑक्साइड की खोज सन् 1772 में एक अँग्रेज़ पादरी और रसायनशास्त्री जोसेफ प्रीस्टले ने की थी। ये वही प्रीस्टेल थे जिन्होंने ऑक्सीजन, कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड, अमोनिया और सल्फर डाई ऑक्साइड जैसी गैसों की भी खोज की थी।



हम्फ्री डेवी

एक बार प्रीस्टले ने अमोनियम नाइट्रेट के घोल में कुछ लोहे की छीलन डालकर उसे गरम किया। घोल में से मीठी गंध वाली एक गैस निकली। प्रीस्टले ने इसे पानी में से गुज़ारकर (ताकि अशुद्धियाँ और ज़हरीलापन निकल जाये) इकट्ठा कर लिया। उन्होंने सोचा यह खाद्यपदार्थों को सुरक्षित रखने के काम आ सकती है, पर अपनी इस कोशिश में वे असफल रहे।





झट से अपने मोज़े उतारो,
लॉफिंग गैस कम पड़ गई है।

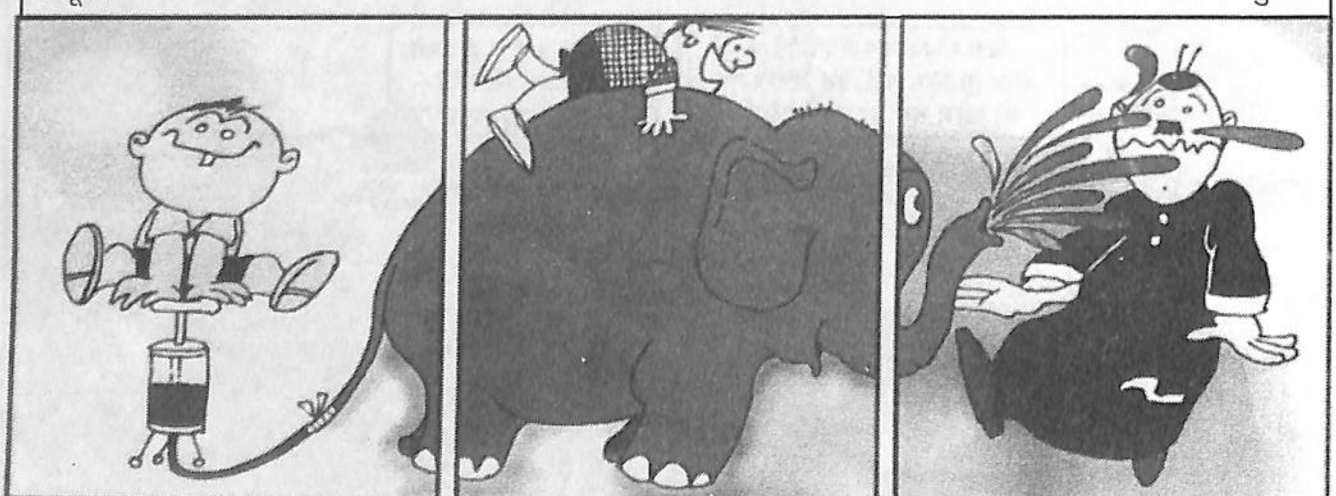
एक दिन एक सत्रह साल का चिकित्सा सहायक हम्फ्री डेवी उनके पास आया और उसने इस गैस को चार-पाँच बार ज़ोर-ज़ोर से सूँघा। उसे पता नहीं क्या हुआ। वह बोला - "सर! मेरा सिर बड़े मज़ेदार तरीके से घूम रहा है। हाथ-पाँव ढीले पड़ रहे हैं, सुनने की शक्ति बढ़ गयी है। सर! खूब अच्छा लग रहा है।" और वह बिना बात ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा। उसने कहा - "सर! यह नाइट्रस ऑक्साइड नहीं, इसे तो लाफिंग गैस कहना चाहिए।" डेवी ने अपने दोस्तों को इस गैस के बारे में बताया। जिन्हें डेवी ने इसके बारे में बताया उनमें प्रसिद्ध कवि कॉलरिज और विद्वान पीटर रॉजेट जैसे लोग भी थे। शीघ्र ही इसे पार्टियों और मेलों में मेहमानों के मनोरंजन के लिए ले जाया जाने लगा - सूँघिये और हँसिये।

एक दिन डेवी के एक दाँत में दर्द हो रहा था। उसने तीन बार ज़ोर-ज़ोर से इस गैस को सूँघा और उसका दर्द लगभग गायब हो गया। इससे उसे यह बात सूझी कि क्यों न इस गैस का उपयोग शल्य चिकित्सा के समय दर्दनाशक के रूप में किया जाए।

लेकिन इस घटना के 40 साल बाद तक ऐसा नहीं हो पाया। तब तक इसका उपयोग घुमंतू चिकित्सा प्रदर्शनियों और मेलों में लोगों के मनोरंजन के लिए ही होता रहा। सिक्का डालो और हँसो! लोग हँसते, पर जब गैस का असर खत्म हो जाता तो सहसा चुप हो जाते और ठगे-से खड़े रह जाते।

अमरीका में एक ऐसी ही प्रदर्शनी में एक बार दंतचिकित्सक डॉ. वेल्स भी पहुँच गये। उन्होंने देखा कि एक आदमी के पैर में गंभीर चोट लग गयी, लेकिन चूँकि उस पर गैस का असर था, इसलिए चोट की तरफ उसका ध्यान ही नहीं गया। डॉ. वेल्स को तुरन्त लगा कि ज़रूर इस गैस में दर्द

ढब्बूजी — आबिद सुरती



को कम करने का गुण है। अगले दिन उन्होंने एक प्रयोग किया। एक दूसरे दंतचिकित्सक को बुलाया और कहा - "मेरी एक दाढ़ बहुत दुख रही है। कृपया इसे निकाल दो। लेकिन पहले मुझे यह गैस अच्छी तरह सूँघ लेने दो।" ऐसा ही किया गया। दाढ़ निकल गयी और डॉ. वेल्स को ज़रा भी दर्द नहीं हुआ।

तबसे नाइट्रस ऑक्साइड का उपयोग सामान्य चिकित्सा और दंत चिकित्सा में दर्दनाशक के रूप में किया जाने लगा।

लेकिन इस कहानी का अन्त सुखद नहीं है। सन् 1845 में डॉ. वेल्स हार्वर्ड मेडीकल स्कूल, बोस्टन में नाइट्रस ऑक्साइड के दर्दनाशक गुण का प्रदर्शन कर रहे थे। मरीज़ को 'गैस' दी गयी और उसका दाँत निकाला गया। पता नहीं मरीज़ को पर्याप्त गैस नहीं दी गयी थी या क्या बात थी कि वह दर्द के मारे आह ऊह करने लगा। उपस्थित दर्शक हूटिंग करने लगे। डॉ. वेल्स बेहद मायूस हुए। इस सार्वजनिक शर्मिन्दगी से उनका धन्धा चौपट हो गया और तीन साल बाद उन्होंने आत्महत्या कर ली।

मज़े की बात है कि मृत्यु के 150 साल बाद वेल्स को "एनस्थीसिया का जनक" का खिताब दिया गया और उनके तरीके को सारी दुनिया के दन्तचिकित्सकों ने अपना लिया।

लेकिन लोगों ने पाया कि ज़्यादा समय तक नाइट्रस ऑक्साइड को सूँघते रहना स्वास्थ्य के लिए घातक हो सकता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि नाइट्रस ऑक्साइड सूँघते समय पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन भीतर नहीं जा पाती। रिपोर्ट मिली कि नाइट्रस ऑक्साइड ज़्यादा सूँघ लेने से कुछ लोग बेहोश हो गये और कुछ तो मर भी गये।



जोसेफ प्रीस्टले

लाफिंग गैस को सुरक्षित बनाने के लिए लोग उसमें ऑक्सीजन मिलाने लगे।

आजकल जिसे लाफिंग गैस कहा जाता है वह दरअसल नाइट्रस ऑक्साइड और ऑक्सीजन का मिश्रण होती है। इसमें सामान्यतया 70 प्रतिशत ऑक्सीजन और 30 प्रतिशत नाइट्रस ऑक्साइड होती है। यह मरीज़ों के लिए अधिक सुरक्षित मानी जाती है। ●

लाफिंग गैस के मज़े लेने हैं?

रोज़-रोज़ तो लाफिंग गैस सूँघने को कहाँ मिलेगी, लेकिन यदि तुमने कभी डिओडोरेन्ट का इस्तेमाल किया हो, तो तुमने लाफिंग गैस ज़रूर सूँघी है। आजकल डिओडोरेन्ट तथा ऐसी ही अन्य स्प्रे में इसी का उपयोग किया जाता है। क्योंकि यह एक निष्क्रिय गैस है इसलिए आलू की चिप्स की थैलियों में भी यही गैस भरी जाती है। पहले ऑक्सीजन भरी जाती थी, पर उससे खाने की वस्तु का स्वाद थोड़ा खराब हो जाता था। लाफिंग गैस का एक और अजीब-सा उपयोग है। इसे मोटर कार रेस वाली कारों के इंजन में भी इस्तेमाल किया जाता है। नहीं, यह रेसिंग कार को हँसाने नहीं लगती, यह इंजन को अधिक शक्ति और रफ्तार देती है।

क्या सोचने लगे? कहाँ मिलेगी लाफिंग गैस? है न!

व्यंग्य लेख

बारात की वापसी

हरिशंकर परसाई

बारात की यात्रा से मैं बहुत घबराता हूँ, खासकर लौटते वक्त जब बराती बेकार बोझ हो जाता है। अगर जी भरकर दहेज न मिले, तो वर का बाप बरातियों को दुश्मन समझता है। मैं सावधानी बरतता हूँ कि बारात की विदा के पहले ही कुछ बहाना करके किराया लेकर लौट पड़ता हूँ।

एक बारात से वापसी मुझे याद है।

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कम्पनी की बस सतना के लिए घण्टे-भर बाद मिलती है, जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। सुबह घर पहुँच जायेंगे। हम में से दो को सुबह काम पर हाज़िर होना था, इसलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना ज़रूरी था। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफर नहीं करते। क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं? नहीं, बस डाकिन है।

बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी। सदियों के अनुभव के निशान लिये हुए थी। लोग इसलिए इससे सफर नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता था!

बस कम्पनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस से जा रहे थे। हमने उनसे पूछा, "यह बस चलती भी है?" वह बोले, "चलती क्यों नहीं है जी! अभी चलेगी।" हमने कहा, "वही तो हम देखना चाहते हैं। अपने आप चलती है यह?"

"हाँ जी, और कैसे चलेगी?"

हम आगा-पीछा करने लगे। डाक्टर मित्र ने कहा, "डरो मत, चलो! बस अनुभवी है। नयी-नवेली बसों से ज़्यादा विश्वसनीय है। हमें बेटों की तरह प्यार से गोद में लेकर चलेगी।"

हम बैठ गये। जो छोड़ने आये थे, वे इस तरह देख रहे थे, जैसे अन्तिम विदा दे रहे हैं। उनकी आँखें कह रही थीं – 'आना-जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जायेगा - राजा, रंक, फकीर। आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।'

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। ऐसा लगा, जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे उनसे हमें बचना था। हम फौरन खिड़की से दूर सरक गये। इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

बस सचमुच चल पड़ी और हमें लगा कि यह गांधीजी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आन्दोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी। उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी। हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था। पूरी बस सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरे से गुज़र रही थी। सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था। कभी लगता सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गयी है। कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है। आठ-दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गये। यह समझ में नहीं आता था कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

एकाएक बस रुक गयी। मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजने लगा। अब मैं उम्मीद कर रहा था कि थोड़ी देर बाद बस-कम्पनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे और उसे नली से पेट्रोल पिलायेंगे, जैसे माँ बच्चे के मुँह में दूध की शीशी लगाती है।

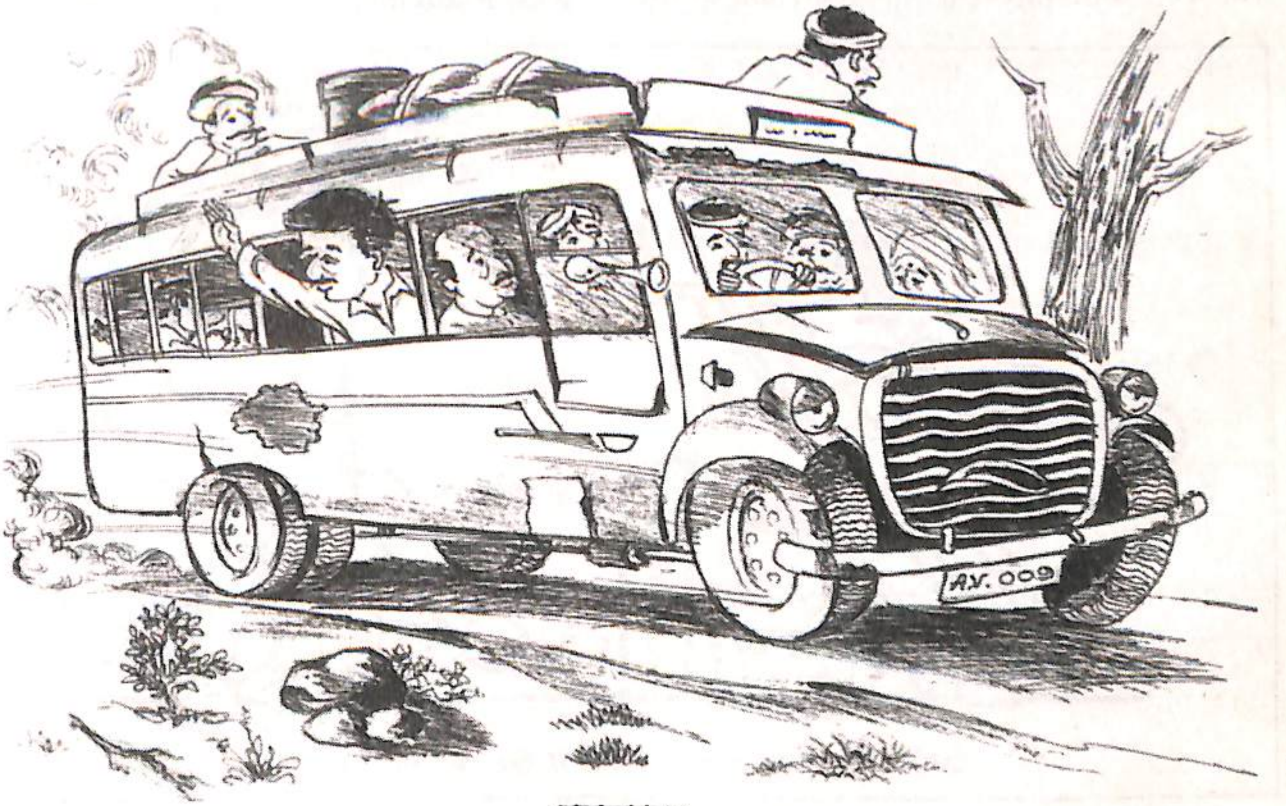
बस की रफ्तार अब पन्द्रह-बीस मील हो गयी थी। मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था। ब्रेक फेल हो सकता है, स्टीयरिंग टूट सकता है। प्रकृति के दृश्य बहुत लुभावने थे। दोनों तरफ हरे-हरे पेड़ थे, जिन पर पक्षी बैठे थे। मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था। जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकराएगी। वह निकल जाता तो दूसरे पेड़ का इन्तज़ार करता। झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जायेगी।

एकाएक फिर बस रुकी। ड्राइवर ने तरह-तरह की तरकीबें कीं, पर वह चली नहीं। सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू हो गया था। कम्पनी के हिस्सेदार कह रहे थे – 'बस तो फर्स्ट क्लास है जी! यह तो इत्तेफाक की बात है।'

क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी। लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गयी हो। हमें ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं। अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अन्त्येष्टि करनी पड़ेगी।

हिस्सेदार साहब ने इंजन खोला और कुछ सुधारा। बस आगे चली। उसकी चाल और कम हो गयी थी।

धीरे-धीरे वृद्धा की आँखों की ज्योति जाने लगी। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती– 'निकल जाओ, बेटी! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही।'

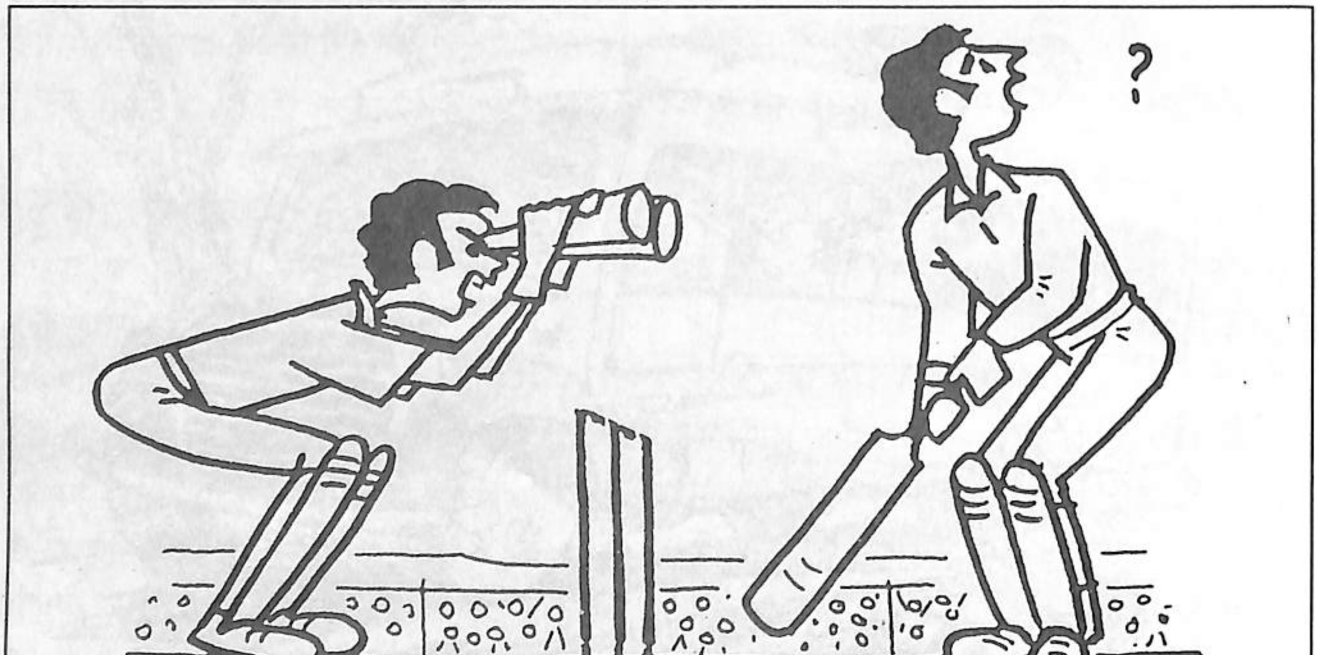


एक पुलिया के ऊपर पहुँचे ही थे कि एक टायर फिस्स करके बैठ गया। वह बहुत ज़ोर से हिलकर थम गयी। अगर स्पीड में होती, तो उछलकर नाले में गिर जाती। मैंने उस कम्पनी के हिस्सेदार की तरफ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा। वह टायरों की हालत जानते हैं, फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफर कर रहे हैं। उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है। सोचा, इस आदमी के साहस और बलिदान भावना का सही उपयोग नहीं हो रहा है। इसे तो किसी क्रांतिकारी आन्दोलन का नेता होना चाहिए। अगर बस नाले में गिर पड़ती और हम सब मर जाते तो देवता बाँहें पसारे उसका इन्तजार करते। कहते–'वह महान आदमी आ रहा है, जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिये। मर गया, पर टायर नहीं बदला।'

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली। अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना क्या, कहीं भी, कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। लगता था, ज़िन्दगी इसी बस में गुज़ारना है, और इससे सीधे उस लोक की ओर प्रयाण कर जाना है। इस पृथ्वी पर उसकी कोई मंज़िल नहीं है। हमारी बेताबी, तनाव खत्म हो गये। हम बड़े इत्मीनान से घर की तरह बैठ गये। चिन्ता जाती रही। हँसी-मज़ाक चालू हो गया।

इसके बाद किसी कष्ट का अनुभव नहीं हुआ। पन्ना से पहले ही सब मुसाफिर उतर चुके थे। बस कम्पनी के हिस्सेदार शहर के बाहर ही अपने घर पर उतर गये। बस शहर में अपने ठिकाने पर रुकी। कम्पनी के दो मालिक रजाइयों में दुबके बैठे थे। रात का एक बजा था। हम पाँचों उतरे। मैं सड़क के किनारे खड़ा रहा। बाकी तीन मित्र बस-मालिकों पर झपटे। उनकी गर्म डाँट हम सुन रहे थे। पर वे निराश लौटे। बस-मालिकों ने कह दिया था, सतना की बस तो चार-पाँच घण्टे पहले जा चुकी। अब लौटती होगी। अब तो बस सबेरे ही मिलेगी।

आसपास देखा, सारी दुकानें, होटल बन्द। ठण्ड कड़ाके की। भूख भी खूब लग रही थी। तभी



और अब शोएब अख्तर ने दौड़ना शुरू कर दिया है...

डाक्टर बस-मालिकों के पास गया। पाँचेक मिनिट में उनके साथ लौटा तो बदला हुआ था। बड़े अदब से मुझसे कहने लगा, "सर, नाराज़ मत होइए। सरदारजी कुछ इन्तज़ाम करेंगे। सर, सर, उन्हें अफसोस है कि आपको तकलीफ हुई।"

अभी डॉक्टर बेतकल्लुफी से बातें कर रहा था और अब मुझे 'सर' कह रहा है। बात क्या है? कहीं ठर्रा ज़्यादा असर तो नहीं कर गया! मैंने कहा, "यह तुमने क्या 'सर-सर' लगा रखी है?"

उसने फिर वैसे ही झुककर कहा, "सर, नाराज मत होइए! सर, कुछ इन्तज़ाम हुआ जाता है।"

मुझे तब भी कुछ समझ में नहीं आया। डॉक्टर भी परेशान था कि मैं समझ क्यों नहीं रहा हूँ। वह मुझे अलग ले गया और समझाया, "मैंने इन लोगों से कहा है कि तुम संसद-सदस्य हो। इधर जाँच करने आये हो। मैं एक क्लर्क हूँ, जिसे साहब ने एम.पी. को सतना पहुँचाने के लिए भेजा है। मैंने इनसे कहा कि सरदारजी, मुझ गरीब की तो गर्दन कटेगी ही, आपकी भी लेवा-देई हो जायेगी। वह स्पेशल बस से सतना भेजने का इन्तज़ाम कर देगा। ज़रा थोड़ा एम.पी. पन तो दिखाओ। उल्लू की तरह क्यों पेश आ रहे हो?"

मैं समझ गया कि मेरी काली शेरवानी काम आ गयी। यह काली शेरवानी और ये बड़े बाल मुझे कई रूप दे देते हैं। नेता भी दिखता हूँ, शायर भी और अगर बाल सूखे बिखरे हों तो जुम्मन शहनाई वाले का भी धोखा हो जाता है।

मैंने मिथ्याचार का आत्मबल बटोरा और लौटा तो ठीक संसद-सदस्य की तरह। आते ही सरदारजी से रौब से पूछा, "सरदारजी, आर.टी.ओ. से कब तक इस बस को चलाने का सौदा हो गया है?"

सरदारजी घबरा उठे। डॉक्टर खुश कि मैंने फर्स्ट-क्लास रोल किया है।

रौबदार संसद-सदस्य का एक वाक्य काफी है, यह सोचकर मैं दूर खड़े होकर सिगरेट पीने लगा। सरदारजी ने वहीं मेरे लिए कुर्सी डलवा दी। वह डरे हुए थे और डरा हुआ मैं भी था। मेरा डर यह था कि कहीं पूछताछ होने लगी कि मैं कौन संसद-सदस्य हूं तो क्या कहूँगा। याद आया कि अपने मित्र महेशदत्त मिश्र का नाम धारण कर लूंगा। गाँधीवादी होने के नाते, वह थोड़ा झूठ बोलकर मुझे बचा ही लेंगे।



अब मेरा आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया। झूठ अगर जम जाये तो सत्य से ज़्यादा अभय देता है।

मैं वहीं बैठे-बैठे डॉक्टर से चीखकर बोला, "बाबू, यहाँ क्या कयामत तक बैठे रहना पड़ेगा? इधर कहीं फोन हो तो ज़रा कलेक्टर को इत्तला कर दो। वह गाड़ी का इन्तज़ाम कर देंगे।"

डॉक्टर वहीं से बोला, "सर, बस एक मिनट! जस्ट ए मिनट, सर!"

थोड़ी देर बाद सरदारजी ने एक नयी बस निकलवायी। मुझे सादर बैठाया गया। साथियों को बैठाया। बस चली पड़ी।

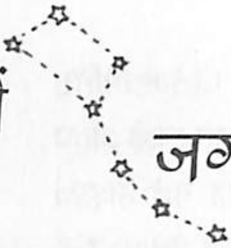
मुझे एम.पी. पन काफी भारी पड़ रहा था। मैं दोस्तों के बीच अजनबी की तरह अकड़ा बैठा था। डॉक्टर बार-बार 'सर' कहता रहा और बस का मालिक 'हुज़ूर'।

सतना में जब रेलवे के मुसाफिरखाने में पहुँचे तब डाक्टर ने कहा, "अब तीन घण्टे लगातार तुम मुझे 'सर' कहो। मेरी बहुत तौहीन हो चुकी है।"

●



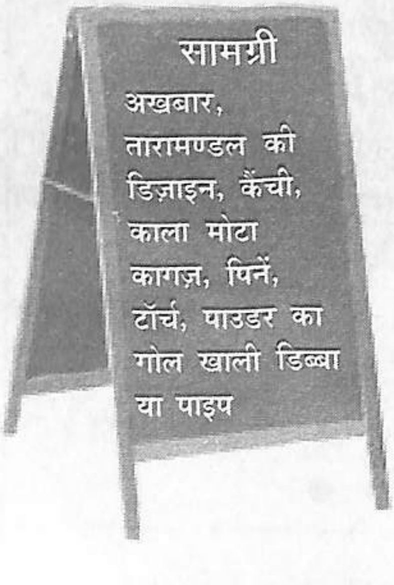
आसमान में जगमग करते तारे



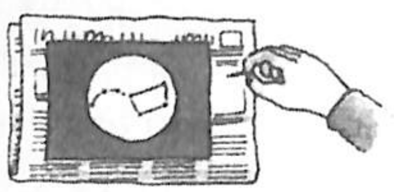
गर्मियों के दिन हैं। इन दिनों कभी न कभी छत पर सोते हुए आसमान देखने का मौका मिल ही जाता है। आसमान निहारो तो सितारों से मिलकर बनी कितनी ही अजब-गजब शक्लें नज़र आती हैं। हज़ारों सालों से लोग बादलों, चाँद और तारों के समूहों में न जाने किस-किस की छवियाँ देखते आए हैं। तभी तो चाँद में चरखा कातती नानी दिखी, बिन्दियों वाला शेर, तराजू और...और भी न जाने क्या-क्या दिखा। इस बार प्रयोगशाला में क्यों न अपने घर में आकाश ले आएँ।

तारामण्डल

रात के आकाश में तारे, रोशनी की छोटी-छोटी बिन्दियों जैसे नज़र आते हैं। आसपास के कुछेक तारों को एक साथ देखो तो उनमें अलग-अलग छवियाँ दिखेंगी। तारों के ये समूह तारामण्डल कहलाते हैं। देखने में भले ही ये तारे पास-पास दिखें लेकिन हैं बहुत ही दूर। इतनी दूर कि शायद हमारी कल्पना को भी कुछ घोड़े उधार लेने पड़ें।



दिए गए तारामण्डलों के डिज़ाइन को उसके गोले सहित कागज़ पर बना लो। अखबार को मोड़कर बिछाओ। इसपर पहले काला कागज़ और फिर तारामण्डल रखो।



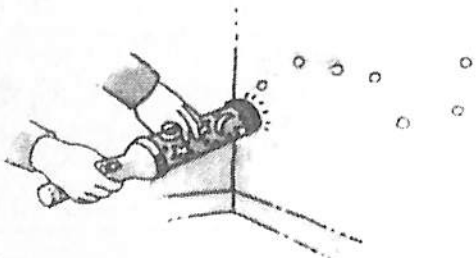


अब तारामण्डल के तारों पर पिन से छेद करो। इस तरह नीचे रखे काले कागज़ पर भी छेद बन जाएँगे।

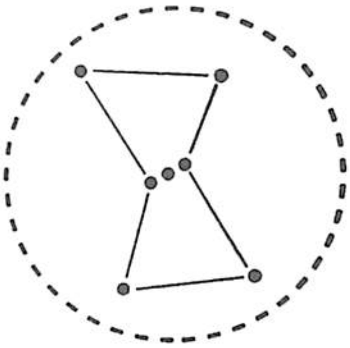
पाइप या ट्यूब के एक सिरे पर बीचोंबीच काला कागज़ रखो। बाकी का कागज़ नीचे की ओर मोड़ दो और रबर बैण्ड से कस दो। (चित्र देखते जाना न भूलना)



पाइप के दूसरे सिरे पर टॉर्च रखो। अब अँधेरे कमरे में जाओ और किसी खाली दीवार पर अपने आसमान में सप्तऋषि चमकाओ।



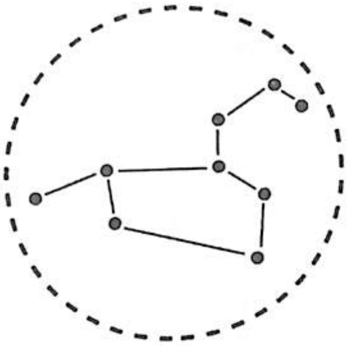
तारामण्डल और भी हैं...



ओरायन या मृग

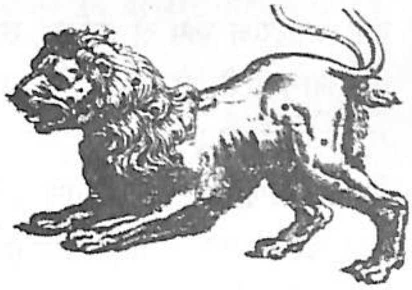
यह यूनानी दंतकथाओं का एक मशहूर शिकारी है। बीच के तीन चमकते तारे उसकी बेल्ट है।

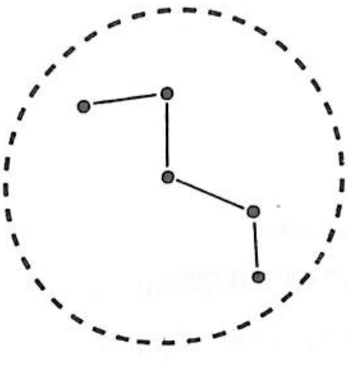




सिंह

क्या तुम्हें भी इसमें सिंह की छवि दिखी?

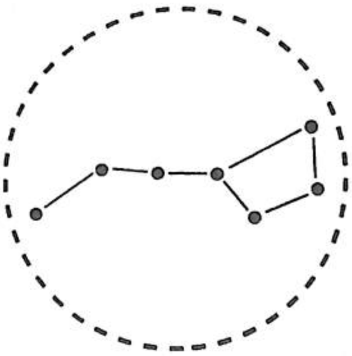




शर्मिष्ठा

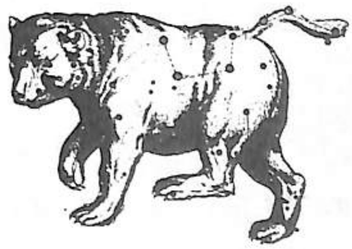
यूनानियों को इन तारों के समूह में एक खूबसूरत और ताकतवर रानी कैसियोपिया, अपने सिंहासन में बैठी दिखी।





सप्तर्षि

अंग्रेज़ी में इसका नाम है ग्रेट बेयर यानी विशाल भालू। ढूँढ़ो ये सात तारे इसमें।



राम आ, ईख ला

शरद जोशी

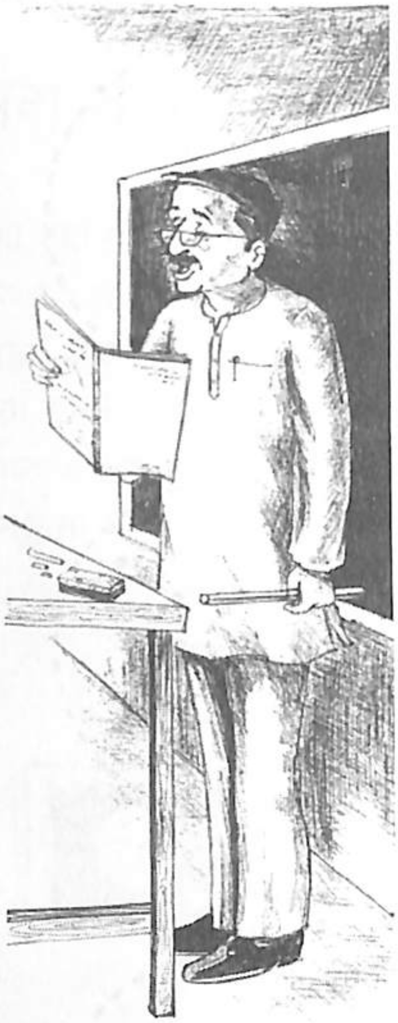
एक पिताजी किस्म के सज्जन मुझे बता रहे थे कि बच्चों के लिए जो साहित्य छप रहा है, खास अच्छा नहीं है। वही परियों के किस्से और चन्द्रलोक पर जाने वगैरह की बातें, जिससे बच्चों को कोई शिक्षा नहीं मिलती। मैं उनसे असहमत हुआ। (अगर बहस में मज़ा लगाना है, तो असहमत होना ज़रूरी है।) मैंने कहा कि परियों की कहानियाँ पढ़कर लड़कों को, अप्रत्यक्ष रूप से कहिए, लड़कियों के मिजाज़ की जानकारी हो जाती है। भावी जीवन के लिए यह ज़रूरी है। रहा चन्द्रलोक पर जाने के लिए विज्ञान-शिक्षक द्वारा मशीन बनाने का सवाल, तो भाई बच्चों को इससे चन्द्रलोक के विषय में या मशीन के विषय में जानकारी नहीं मिलती, पर शिक्षकों के विषय में ज़रूर जानकारी मिलती है, जो शाला की पढ़ाई छोड़कर दीगर कामों में लगे रहते हैं। कुछ देर बहस के बाद मैंने मंज़ूर कर लिया कि बच्चों के लिए अच्छा साहित्य नहीं लिखा जा रहा। किसी लेखक से कहिए कि दूसरे अच्छा नहीं लिख रहे, तो वह नाममात्र की बहस के बाद बात मंजूर कर लेता है।

"आप बाल-साहित्य क्यों नहीं लिखते?" वे पूछने लगे।

"आप न बच्चे हैं न प्रकाशक, यह माँग करने का आपको क्या अधिकार है?" मैंने कहा।

"मैं पाँच बच्चों का बाप हूँ और एक प्रकाशक का दोस्त। अगर आप लिखें, तो मैं प्रकाशित करवा सकता हूँ।"

मैंने आगे बढ़कर हाथ मिलाया तुरन्त। किसी लेखक के लिए वह क्षण, जब उसे पता लगता है कि उसकी पुस्तक छपने वाली है, कितने सुख का क्षण होता है, मलय-समीर बहने लगा। कोयल, पपीहा, तोता, मैना से लेकर झींगुर तथा नाना प्रकार के कीड़े-मकोड़े गुंजार करने लगे। चाँद बादलों से बाहर आया, पेड़ झूम उठे, फूल खिले और तितलियाँ लपकीं। मैंने भावविभोर होकर स्वीकार कर लिया है कि अगर यही बात है, तो बाल साहित्य लिखूँगा।



"अवश्य! पर ख्याल रखिए, वह ऐसा साहित्य हो जो बच्चों के लिए वास्तव में उपयोगी हो।"

उन पिताजी किस्म के सज्जन की बातों पर मैंने विचारा। अब मेरी मजबूरी यह है कि गम्भीरतापूर्वक ज़्यादा देर विचार नहीं कर सकता। बड़ी जल्दी चाय माँगने लगता हूँ। फिर भी चूँकि समस्या राष्ट्रीय महत्व की थी, इसलिए मैं काफी देर विचारता रहा। कोई समझिए, बीस मिनट तक लगातार। अब यह भी तय है कि जब लिखना ही है, तो क्यों नहीं अमर साहित्य ही लिखा जाए। लेखक मर जाए और साहित्य जीवित रहे, वही अमर साहित्य है, यह परिभाषा मैं नहीं मानता। पढ़ने वाले मरते जाएँ

और साहित्य जीवित रहे, वही अमर साहित्य है।

बच्चों के लिए ज़रूरी है कि वे अपने शिक्षक को सबसे पहले समझें। उसके गुण, उसका धन्धा और उसकी आदतें। बच्चों की पुस्तक के प्रारम्भिक पाठ ऐसे ही होने चाहिए -

राम और गुरुजी

राम शाला आया। वह हाथ में ईख लिये था। गुरुजी ने कहा, "आ राम, आ। ईख इधर रख। पाठ पढ़।" राम ने पाठ पढ़ा। खेल का घण्टा बजा। सब खेलने लगे। गुरुजी ने ईख चूसना शुरू किया। वे पूरी ईख चूस गये। ईख मीठी थी। गुरुजी ने राम से पूछा, "ईख कहां से लाये थे?" राम ने कहा, "गुरुजी, शाला के रास्ते में एक खेत है। मैंने वहीं से ईख उखाड़ी।"

गुरुजी ने कहा, "शाबाश! तुम अच्छे बालक हो। रोज़ ईख लाया करो।"

राम रोज़ शाला आता है। गुरुजी के लिए वह ईख लाता है। गुरुजी रोज़ शाला के बरामदे में ईख चूसते हैं। एक दिन ईख के खेत के किसान ने राम को ईख चुराते पकड़ लिया। उसने राम की पिटाई की। गुरुजी को पता लगा। वे थाने गये और किसान की शिकायत की। थानेदार ने किसान को सज़ा दी। किसान ने गुरुजी और राम से क्षमा मांगी। वह रोज़ एक ईख राम को देने लगा। राम गुरुजी को लाकर ईख देने लगा। गुरुजी बरामदे में ईख चूसते हैं।

ईख लम्बी होती है। ईख मीठी होती है। ईख गुणकारी होती है। गुरुजी ने ईख के लाभ बालकों को बताये। ईख से शक्कर बनती है। देश में ईख की खेती बढ़ रही है। देश में शालाएँ और गुरुजी भी बढ़ रहे हैं। किसान ईख उगाता है। राम आदर्श बालक है। गुरुजी ईख चूसते हैं।

मैं सोचता हूँ कि इस पाठ से बच्चे शिक्षकों के चरित्र को अच्छी तरह समझ लेंगे और साथ ही उनकी ईख के संबंध में भी अच्छी जानकारी हो जाएगी।

बच्चे जंगल में जाने या इधर-उधर भटकने के लिए बहुत उत्सुक रहते हैं। इस प्रवृत्ति के शमन के लिए यह पाठ उपयुक्त होगा -

मोहन और शेर

मोहन जंगल गया। वह हमेशा जंगल जाता था। एक दिन उसे जंगल में शेर मिला। मोहन साहसी बालक था। वह शेर से नहीं डरा। शेर भी साहसी शेर था। वह भी मोहन से नहीं डरा। शेर ने मोहन पर हमला किया। शेर ने मोहन को खा लिया। गलती मोहन की थी। उसे जंगल नहीं जाना चाहिए था। अच्छे बच्चे जंगल नहीं जाते। अच्छे बच्चे घर में रहते हैं। अच्छे बच्चे कहीं नहीं जाते। वे सिर्फ शाला और अस्पताल जाते हैं।



पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी का संघर्ष आज की समस्या है। अगर नयी पीढ़ी को कम आयु में ही यह समझा दिया जाए कि पुरानी पीढ़ी का आदर करना चाहिए, तो यह समस्या टल सकती है। एक पाठ इस दृष्टि से भी लिखा है -

पिताजी का उपयोग

ये पिताजी हैं। पिताजी हमेशा बच्चों से बड़े होते हैं। बड़ों का आदर करना चाहिए। आदर करने से लाभ होता है। किसी का आदर कर तुम उससे काम निकाल सकते हो। पिताजी कोट पहनते हैं। कोट में जेब रहती है। जेब में बटुआ रहता है। बटुए में पैसा रहता है। पिताजी से तुम पैसा ले सकते हो। पैसा आज की दुनिया में ज़रूरी है। पिताजी का आदर करना चाहिए। उनसे पैसा मिलता है।

●

आजकल इस तरह के पाठ तैयार करने में जुटा हूं। रोज़ ही एकाध पाठ बना लेता हूँ समस्या गंभीर है और मैं उस पर गंभीरता से ध्यान दे रहा हूँ। बच्चे भी जब पढ़ेंगे, गंभीर हो जाएँगे। उन्हें भावी नागरिक होना है और वह भी किसी ऐसे-वैसे देश का नहीं, बल्कि भारत का। उनमें कई गुण एक साथ चाहिए। उन्हें कई बातें सीखनी हैं। जैसे – 'मेहमान आया। इससे बच। यह घर में ठहरेगा। यहीं खाना खाएगा। यह तुझे लूटेगा। तू दरवाज़ा बन्द कर। ताला लगा। खिसक जा।' इस प्रकार के पाठ नये संस्कारों का निर्माण करेंगे। आज के मनुष्य ने जो सच्चाइयाँ अनुभव से सीखी हैं, वे सब यदि बच्चे पाठ के रूप में पढ़ लें तो दुनिया आगे बढ़े।

और जब कलम उठी ही है तो दुनिया बढ़ेगी ही। अब पिताजी गण शौक से बच्चों के उत्पादन में रुचि लें। बन्दा अब बाल-साहित्य का लेखक हो रहा है।

●

फरवरी 2006 अंक की माथापच्ची एवं चित्र पहेली के हल

1. तीन-तीन गेंदों को तोलकर पता चल जाएगा कि ज़्यादा भारी गेंद किस पलड़े में है। उस पलड़े में रखी दो गेंदों को तोलकर पता कर लो कि उनमें भारी गेंद कौन-सी है। अगर दोनों गेंद बराबर वज़न की हैं तो तीसरी गेंद भारी गेंद होगी।

   मान लो दोनों पलड़ों की गेंदें बराबर वज़न की हैं तो इसका मतलब है कि भारी गेंद बाकी की तीन गेंदों में है। तो पहले की तरह कोई भी दो गेंदों को तोलकर पता चल जाएगा कि कौन-सी गेंद ज़्यादा भारी है।

2. पाँच लीटर वाले बर्तन में तीन लीटर वाले बर्तन को भरकर दूध डालो। जब दूसरी बार में तीन लीटर वाले बर्तन में एक लीटर दूध बाकी रह जाएगा। एक लीटर दूध देने के बाद तीन लीटर के बर्तन से तीन लीटर दूध और दे दो।

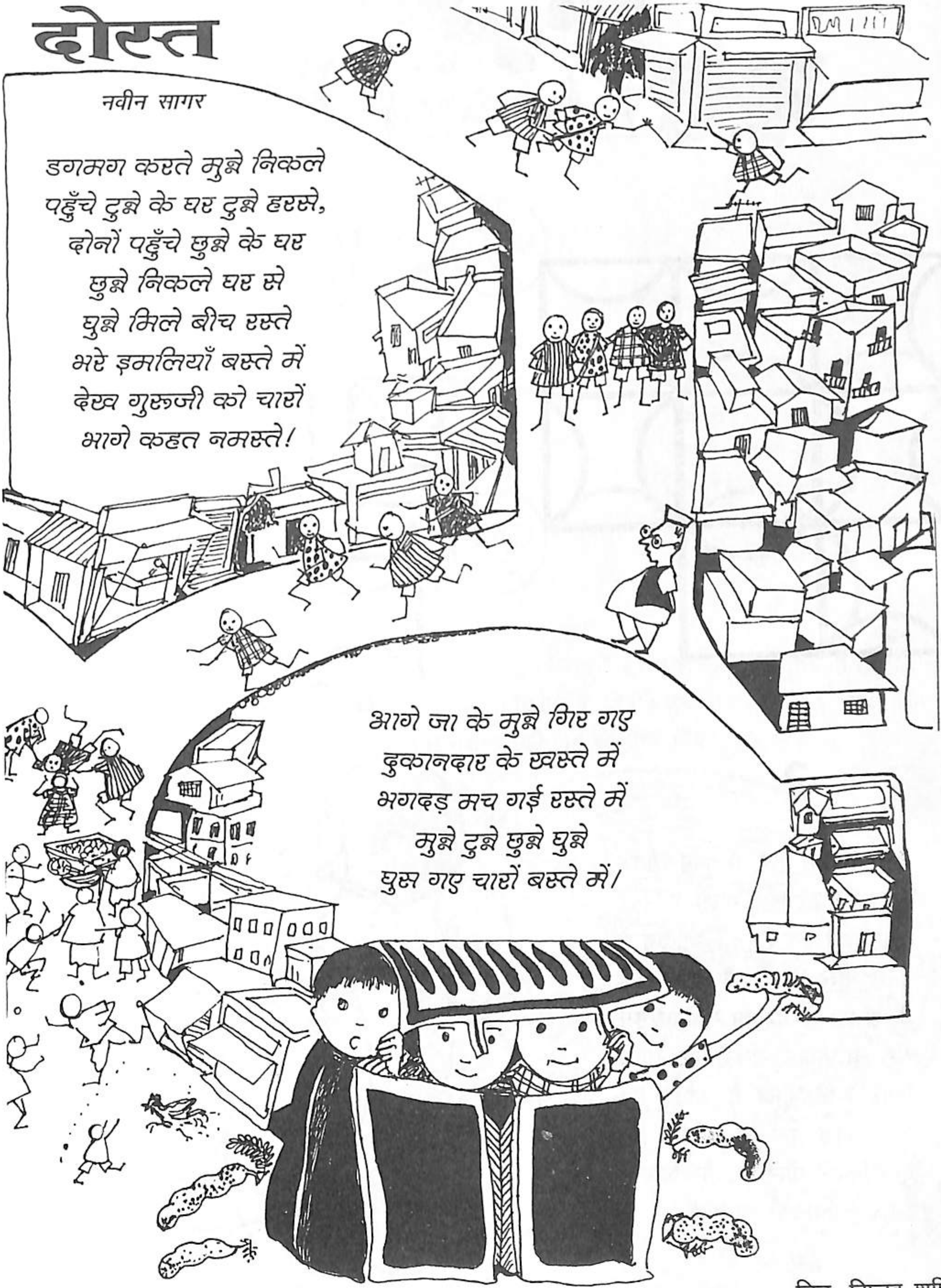
क		सि	ता	र		स	प	ना
ता	जि	या		सो	ता		त्त	
र		र		इ		प	ल	क
	चू		ब	या	न			मा
म	हा	व	त		ह	नु	मा	न
दा			ख	ब	र		र्च	
री	छ			र		बा		चा
	त		बाँ	ग		रा	व	ण
श	री	फा		द	वा	त		क्य

दोस्त

नवीन सागर

डगमग करते मुन्ने निकले
पहुँचे टुन्ने के घर टुन्ने हरसे,
दोनों पहुँचे छुन्ने के घर
छुन्ने निकले घर से
घुन्ने मिले बीच रस्ते
भरे इमलियाँ बस्ते में
देख गुरुजी को चारों
भागे कहत नमस्ते!

आगे जा के मुन्ने गिर गए
दुकानदार के खस्ते में
भगदड़ मच गई रस्ते में
मुन्ने टुन्ने छुन्ने घुन्ने
घुस गए चारों बस्ते में।



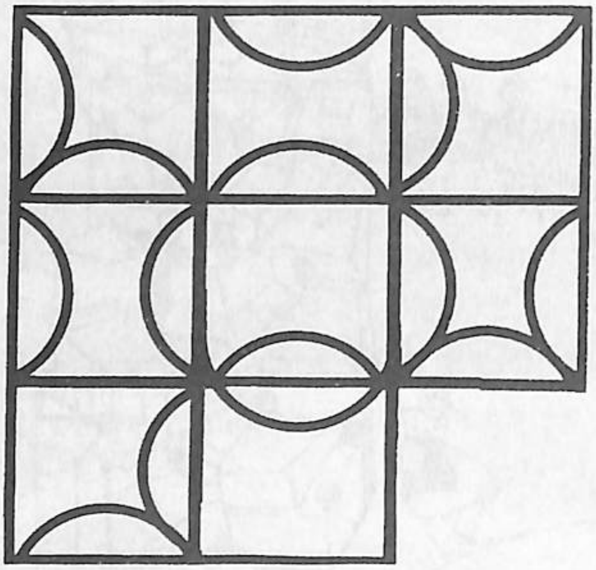
चित्र- विप्लव शशि

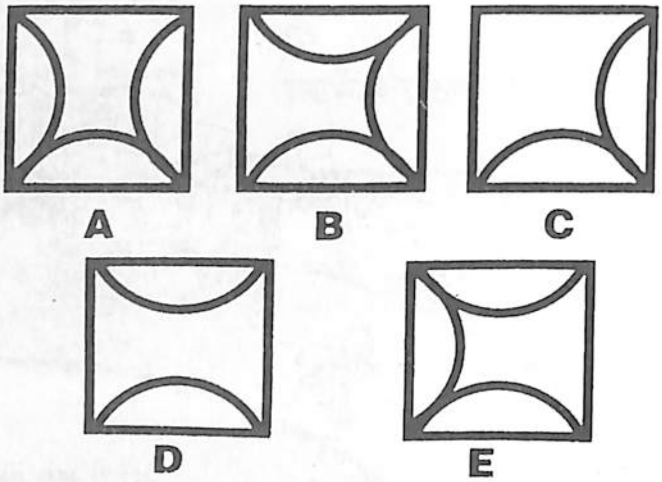
माथा पच्ची



1

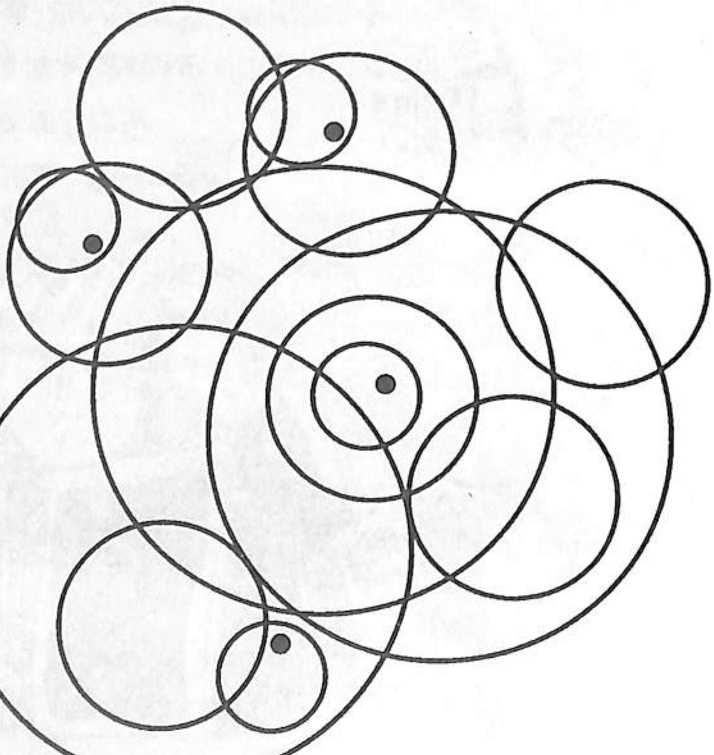
नौ खानों के इस फ्रेम से एक खाना गिर गया है। यह खाना इन पाँच खानों में से एक है। पर कौन सा?



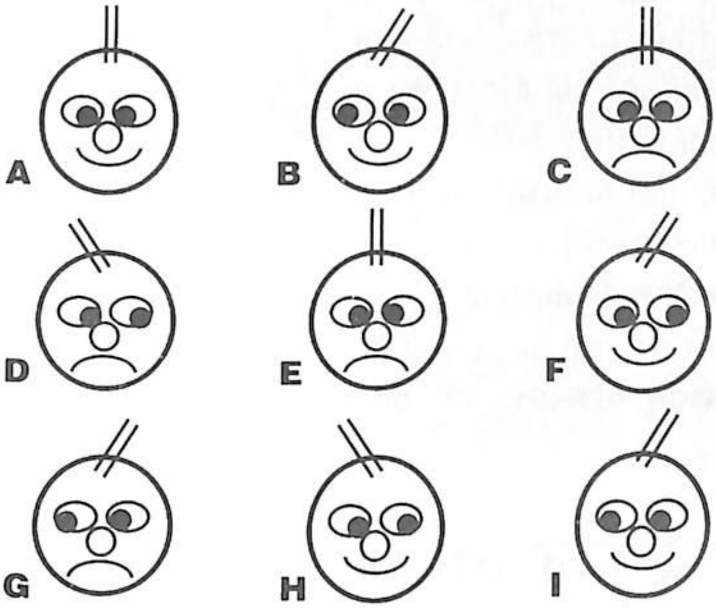


2

इस चित्र में ऐसे तो कुल चौदह गोले हैं। चार छोटे गोलों के अंदर एक बिंदी बनी है। हाँ, लेकिन ये छोटे गोले किसी और बड़े गोले के अंदर हैं। इसका मतलब हम यह नहीं कह सकते कि बिंदी सिर्फ छोटे गोले के अंदर है। ज़रा जोड़ कर तो बताओ कि कुल कितने गोले ऐसे होंगे जिनके अंदर ये बिंदियाँ आती हैं?



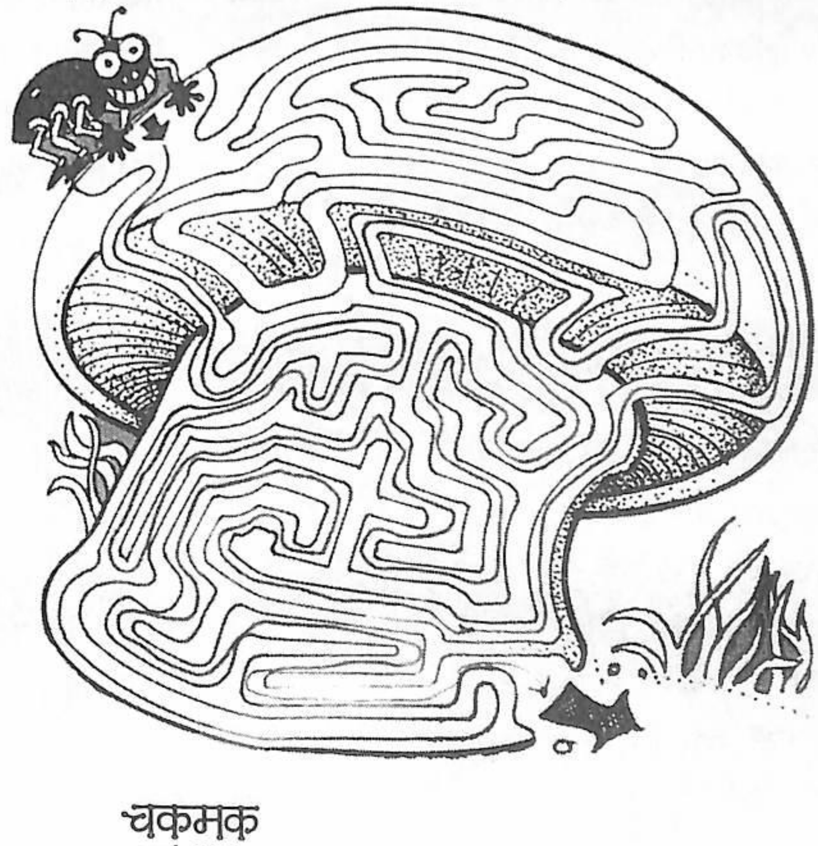
3 सरसरी नजर से देखने पर भले ही ये सब चेहरे एक से लगें पर अगर गौर से देखोगे तो इनमें तुम्हें कुछ फर्क नज़र आएँगे। तुम्हें बस इतना बताना है कि इनमें से कितने चेहरे हँस रहे हैं?



4

एक प्लास्टिक या कागज़ का एक कप है। तुम्हे इसे बगैर हाथ लगाए उठाना है। तुम्हारे पास एक फुग्गा या गुब्बारा है, एक तौलिया है और एक शरबत पीने वाली नली है। तुम इन तीन चीज़ों के इस्तेमाल से कितने तरीकों से कप को उठा सकते हो?

6 कितनी पेचीदा गलियाँ हैं इस मशरूम की। कुछ भी हो अब इस कीड़े को तो निकालना ही है। तुम्हें क्या लगता है कीड़ा बगैर फँसे मशरूम की जड़ से बाहर निकल पाएगा?



5

कोई भी एक संख्या लो। इसे चार से गुणा कर दो। अब इस नई संख्या में 16 जोड़ दो। फिर तीन गुना कर दो। इसे 12 से भाग दो। क्या संख्या आई? चलो अब इस संख्या में से जो संख्या तुमने पहले सोची थी उसे घटा दो।

बताएँ क्या बचा? चार! एक बार और आज़माकर देखो। सोचो तो ऐसा क्यों होता होगा?



पिप्पी लंबेमोज़े तुम्हारी हमउम्र एक लड़की की कहानी है। वह बहुत चुलबुली है। समझदार है। खूब चुटीली बातें करती हैं। निडर है। और बेहद ताकतवर भी है। अपने दोस्तों के बीच छाई हुई। बेहद करामाती! अकेली रहती है। उसका परिवार...? इसके बारे में तुम उसी से सुन लो - मेरी माँ फरिश्ता है और बाबा राजा। कम ही बच्चे होंगे जिनके इतने छैल-छबीले माँ और बाबा हैं। बाबा एक नाव बनाकर मुझे लेने आएँगे और फिर मैं राजकुमारी बन जाऊँगी। वाह! क्या ज़िन्दगी होगी!

मैं शायद यह कहना चाहता हूँ कि तुम पढ़ते हुए इसमें डूबे, खोये बगैर रह ही नहीं सकते। यह यूँ तो स्वीडन की कहानी है पर पिप्पी तुम्हें शायद इतनी दूर की न लगे। इस कथा को लिखा है स्वीडन की मशहूर लेखक एस्ट्रिड लिंडग्रन ने। और इनग्रिड न्यीमन ने इस किताब के बेहद अच्छे चित्र बनाए हैं। इस किताब की कीमत है पचास रुपए। तुम चाहो तो इसे **तूलिका प्रकाशन**, 13, पृथ्वी एवेन्यू अभिरामपुरम चैन्नई - 18 के पते से मँगा सकते हो।

पिप्पी का स्कूल जाना

... पिप्पी का स्कूल न जाना खेद की बात है। आखिर उन्होंने तय किया कि इस मामले में पिप्पी पर ज़ोर डालना चाहिए।

एक दिन जब सारा होमवर्क खत्म करके टॉमी और अन्निका बिल्कुल कुटीर गए, तो टॉमी ने कहा, "हमारी टीचर कितनी अच्छी है तुम कल्पना भी नहीं कर सकतीं।"

"काश तुमको मालूम होता कि स्कूल में कितना मज़ा आता है," अन्निका ने कहा। "मैं स्कूल नहीं जाती तो पागल हो जाती।"

पिप्पी चौकी के ऊपर बैठकर अपने पैरों को बाल्टी में धो रही थी। वह कुछ बोली नहीं, बस अपने पैरों की उँगलियों को सिकोड़कर पानी को इधर-उधर बिखराती रही। "वहाँ ज़्यादा देर रुकना भी नहीं होता," टॉमी ने कहा। "सिर्फ दो बजे तक।"

"हाँ, और हमें क्रिसमस की छुट्टियाँ मिलती हैं, और ईस्टर की और गर्मियों की भी," अन्निका ने कहा।

सोच में डूबी हुई पिप्पी अपने पैर के अँगूठे को चबा रही थी,पर कुछ बोली नहीं। अचानक, हिचकिचाए बिना,उसने सारा पानी फर्श पर उड़ेल दिया जिससे श्री नीलस्सौन-जो वहाँ बैठा आईने के साथ खेल रहा था - की पतलून पूरी तरह भीग गई।





स्कूल पहुँचने की जल्दी थी। वह सरपट स्कूल के मैदान में आ टपकी। सटासट घोड़े से उतरकर उसने उसे पेड़ से बाँधा। फिर कक्षा के दरवाज़े को ऐसे धड़ाम से खोला कि टॉमी, अन्निका और उनके सहपाठी अपनी-अपनी कुर्सियों से उछल पड़े।

"ओय हाये!" अपनी टोपी को हिलाती हुई पिप्पी चिल्लाई। "पहाड़े-शहाड़े के लिए वक्त पर पहुँची हूँ न?" टॉमी और अन्निका ने पहले से ही टीचर को समझाकर रखा था कि पिप्पी लंबेमोज़े नाम की एक नई छात्रा आएगी। पिप्पी के बारे में टीचर ने शहर के लोगों से भी सुन रखा था। वह एक दयालु और खुशमिज़ाज टीचर थी, इसलिए उसने तय कर लिया कि वह पिप्पी को स्कूल में संतुष्ट रखेगी।

किसी के कुछ कहे बिना पिप्पी एक खाली कुर्सी पर जा कर बैठ गई। लेकिन टीचर ने उसकी लापरवाही पर ध्यान नहीं दिया। प्यार से बोली,

"यह तो साफ बेइन्साफी है!" पिप्पी सख्ती से बोली। उसे श्री नीलस्सौन के गीले पतलून की कोई परवाह नहीं थी। "बड़ा अन्याय! मैं बर्दाश्त नहीं करूँगी!"

"क्या नहीं बर्दाश्त करोगी?" टॉमी ने पूछा।

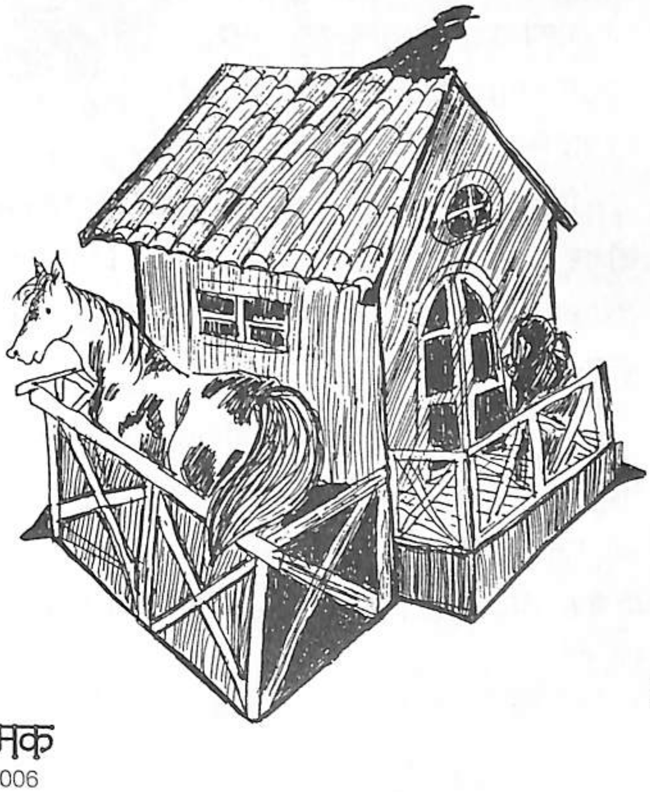
"चार महीने के बाद क्रिसमस है और तुमको क्रिसमस की छुट्टियाँ मिलेंगी। मुझे क्या मिलेगा?" पिप्पी की आवाज़ में निराशा थी। "क्रिसमस की ज़रा-सी छुट्टी भी नहीं," उसने शिकायत की। "यह सब बदलना पड़ेगा। कल से मैं स्कूल जाऊँगी।"

टॉमी और अन्निका ने खुशी से ताली बजाई।

"शाबाश! तो हम आठ बजे हमारे फाटक के बाहर तुम्हारा इंतज़ार करेंगे।"

"अरे नहीं," पिप्पी बोली। "मैं इतनी जल्दी नहीं निकल सकती। और वैसे भी मैं सोचती हूँ कि घोड़े पर जाऊँगी।"

और उसने किया भी ऐसा ही। अगली सुबह ठीक दस बजे पिप्पी ने घोड़े को बरामदे से नीचे उतारा। अगले क्षण शहर के सारे लोग अपनी-अपनी खिड़कियों से ताक कर एक बेलगाम घोड़े को देख रहे थे। यानी कि उन्होंने सोचा कि घोड़ा बेलगाम था पर ऐसी बात नहीं थी। बस, पिप्पी को



"पिप्पी बेटे, स्कूल में तुम्हारा स्वागत है। आशा है तुम यहाँ खुश रहोगी और बहुत कुछ सीखोगी।"

"बिल्कुल! और मेरी आशा है कि मुझे क्रिसमस की छुट्टियाँ मिलेंगी," पिप्पी बोली। "इसलिए तो मैं आई हूँ। सबसे बढ़कर इन्साफ!"

"पहले तुम अपना पूरा नाम बताओ," टीचर ने कहा, "और मैं तुमको स्कूल में दाखिल कर दूँ।"

"मेरा नाम पिप्पी लोटा सामानीया चिक्किलीना पुदीनाहारी इफ्राइमपुत्री लंबेमोज़े है, बेटी कप्तान इफ्राइम लंबेमोज़े की, जो समुंदर के बादशाह थे और अब हैं दक्षिणी समुद्र के राजा। पिप्पी मेरा उपनाम है क्योंकि बाबा को लगा कि पिप्पीलोटा नाम बहुत लंबा है।"

"अच्छा," टीचर ने कहा। "चलो, हम भी तुम्हें पिप्पी ही बुलाते हैं। लेकिन अब हम तुम्हारे ज्ञान की परीक्षा लेते हैं। तुम तो काफी बड़ी हो, तुम्हें बहुत कुछ मालूम होगा। गणित से शुरू करते हैं। तो बताओ, 7 और 5 कितने होते हैं?"



पिप्पी ने उनको आश्चर्य और गुस्से से देखा। टीचर ने समझाया कि स्कूल में जवाब देने का यह तरीका नहीं है। और टीचर को "तुम" करके नहीं बुलाते, उनको, "मिस" कहते हैं।

पिप्पी को खेद हुआ। वह बोली, "सॉरी। मुझे मालूम नहीं था। दुबारा ऐसा नहीं करूँगी।"

"नहीं, और करना भी नहीं चाहिए," टीचर ने कहा। "ठीक है, तो मैं बताती हूँ, 7 और 5 होते हैं बारह।"

"देखा!," पिप्पी बोली। "तुम्हें मालूम था तो पूछा क्यों? उफ! मैं बिल्कुल बुद्धू हूँ। फिर से तुम्हें 'तुम' बोल दिया। माफ करो।" ऐसा कहकर उसने अपने आप को चिहूँटा।

टीचर ऐसे पेश आई जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं। वह बोली, "अच्छा तो पिप्पी बताओ, तुम्हें क्या लगता है, 8 और 4 कितने होते हैं?"

"लगभग 67," पिप्पी बोली।

"बिल्कुल नहीं," टीचर ने कहा। "8 और 4 होते हैं बारह।"

"चल, चल, मेरी अम्मा, तुम हद से बाहर जा रही हो," पिप्पी बोली। "तुम्हीं ने कहा कि 7 और 5 होते हैं बारह। स्कूल में भी कुछ तरीका होना चाहिए। इस तरह के बचपने में तुम्हें दिलचस्पी है तो तुम क्यों न कोने में बैठी गिनती करती रहो और हम शांति से छून-छुआई खेलते हैं। ओहो, फिर से 'तुम' कह दिया!" पिप्पी भयभीत हो बोली। "इस बार भी माफ कर सकती हो? आगे से याद रखने की कोशिश करूँगी।"

टीचर मान गई। पर उसको लगा कि पिप्पी से और गणित करवाना उचित नहीं होगा। वह बाकी बच्चों से सवाल करने लगी।

"क्या टॉमी मेरे सवाल का जवाब दे सकता है?" वह बोली। "अगर लीज़ा के पास 7 सेब हैं और आक्सल के पास 9 तो कुल मिलाकर उनके पास कितने सेब हैं?"

"हाँ बताओ टॉमी," टीचर के सुर में सुर मिलाती हुई पिप्पी बोली। "और यह भी बताओ अगर लीज़ा के पेट में दर्द है और आक्सल के पेट में उससे भी अधिक दर्द हो रहा हो तो यह किसका कसूर है और सेबों को उन्होंने चुराया कहां से?"

टीचर ने सोचा कि गणित को छोड़ देना ही बेहतर होगा। शायद पिप्पी का मन कुछ और पढ़ने में ज़्यादा लगे। उसने एक आकर्षक तस्वीर निकाली जिसमें बने थे रंग-बिरंगे गुब्बारे। गुब्बारों के चित्र के ऊपर लिखा था 'र'।

"तो पिप्पी," टीचर ने जल्दी से कहा, "अब मैं तुमको एक बहुत ही दिलचस्प चीज़ दिखाने वाली हूँ। यह तस्वीर है रं...रं....रंग बिरं .... रं.... रंगे गुब्बारों की। और ऊपर जो लिखा है, वह 'रं' है।"

"वाह भई वाह!" पिप्पी बोली। "मुझे तो यह एक छोटी लकीर के ऊपर मक्खी का मल लगता है। बताओ, रंगीन और गुब्बारे और मक्खी के मल में क्या संबंध है?"

टीचर ने अगली तस्वीर निकाली, जो एक साँप की थी। पिप्पी को समझाया कि ऊपर लिखा अक्षर 'स' था।

"साँप के बारे में याद आया," पिप्पी बोली। "कभी नहीं भूलूँगी जब इंडिया में एक बड़े साँप के साथ मैं लड़ी थी। सोच भी नहीं सकते वह कितना भयंकर था। 14 गज लंबा और भौंरे जैसा गुस्सैल, और यह रोज़ पांच बड़ों और दो बच्चों को खा जाता था। एक दिन उसने मुझे खाना चाहा। खस्सक-से मुझको लपेट लिया पर 'समुद्री यात्रा में दो-चार चीज़ें मैंने भी सीखी हैं' मैंने कहा और उसको सिर पर धाड़-से मारा। उसने स...स...स...स... करके फुफकारा और मैंने उसको दुबारा एक झापड़ दिया और फिर वह मर गया। तो यह है 'स'। क्या खूब!"



पिप्पी को रुककर साँस लेनी पड़ी। अब तक तो टीचर को लगने लगा कि पिप्पी काफी शरारती और उपद्रवी है, इसलिए सोचा कि थोड़ी देर के लिए वह बच्चों को चित्र बनाने देगी। कम-से-कम तब पिप्पी चुपचाप बैठकर चित्र तो बनाएगी। उसने कागज़ और पेन्सिल निकालकर बच्चों में बाँटा।

"जो जी चाहे बनाओ," वह बोली, और अपनी कुर्सी पर बैठे कॉपियाँ जाँचने लगी। कुछ देर बाद सिर उठाकर टीचर ने देखा कि बच्चे क्या कर रहे हैं। सारे के सारे बैठे पिप्पी को एकटक देख रहे थे। वह फर्श पर लेटे जी भर के तस्वीर खींच रही थी।

टीचर क्रुद्ध होकर बोली, "पिप्पी, कागज़ पर तस्वीर क्यों नहीं बनाती?"

"वह तो कब का खत्म हो गया है। उस फालतू कागज़ के टुकड़े पर मेरे घोड़े के लिए जगह कहाँ हैं" पिप्पी बोली। "इस वक्त मैं आगे की टाँगों पर काम कर रही हूँ, पर पूँछ तक पहुँचते-पहुँचते लगता है बाहर बरामदे में आ जाऊँगी।"

चित्र- विप्लव शशि

संकेत बाएँ से दाएँ

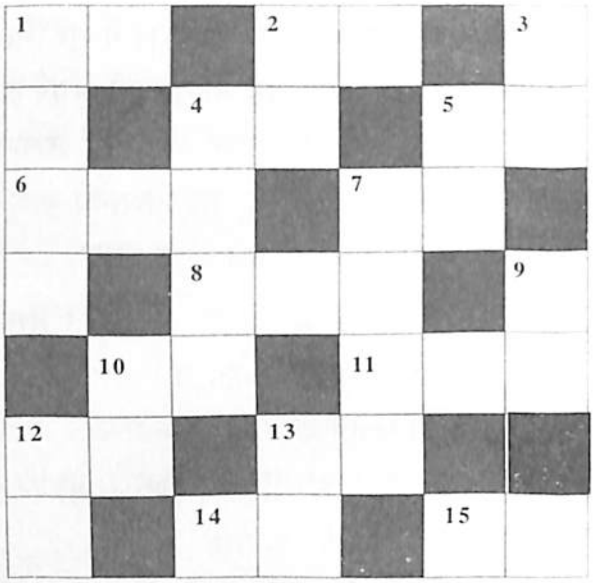
चित्र-पहेली



1



2



4 'दिवाल' में है
हमारे शरीर का
एक अंग

5

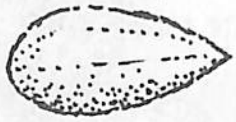


6



7 'अकबरअली' में है
अल्लाताला

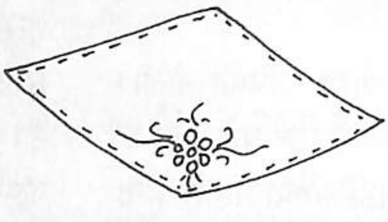
8



10



11



12



13



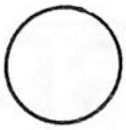
14 हज़ार हज़ार के
सौ नोट

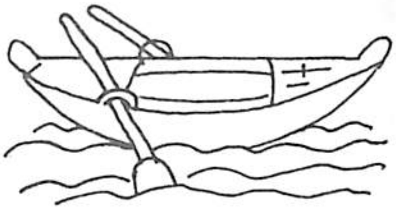
15



संकेत ऊपर से नीचे

1 

2 

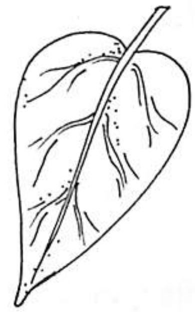
3 

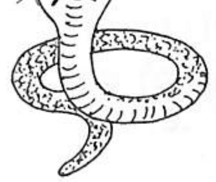
4 

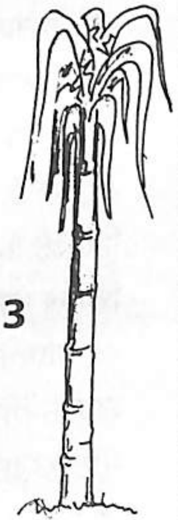
5 

7 हरा या पीला बीजदार एक मीठा फल

9 आज से पहले और आज के बाद का दिन

10 

12 

13 

अलविदा किशोर...



(1955 - 2006)

यह 'कदम्ब का पेड़, अगर माँ होता जमुना तीरे' सुभद्राकुमारी चौहान की यह प्रसिद्ध कविता जब-जब मुझे याद आती है, तब-तब किशोर उमरेकर भी याद आते हैं। चकमक के अक्टूबर, 1993 के अंक में तीन पन्नों पर फैली इस कविता के चित्र किशोर ने ही बनाए थे।

किशोर नहीं रहे। 23 फरवरी, 2006 को ब्रेन हेमरेज से उनका निधन हो गया। लम्बे बाल, घनी दाढ़ी, मोटे शीशे का चश्मा और जीन्स पर खादी का कुरता पहने किशोर अपने किसी रेखांकन की तरह ही नज़र आते थे। जब भी मुलाकात होती, देर तक गले लगे रहते, जैसे जादू की झप्पी दे रहे हों।

बेशक चकमक में उन्होंने कुछ गिने-चुने चित्र ही बनाए हैं। पर वे चकमक के न केवल प्रशंसक, बल्कि शुभचिंतक भी थे। अपने चित्रकार विद्यार्थियों के बीच वे चकमक का लगातार ज़िक्र करते और बच्चों को चकमक में अपने चित्र भेजने के लिए प्रेरित करते रहते। बच्चों के साथ ओरीगैमी की कार्यशालाएँ भी वे करते थे।

एकलव्य द्वारा प्रकाशित 'खेल खिलौने' का आवरण किशोर ने डिज़ायन किया है। उनकी एक कलाकृति तथा उनके रहते, उन पर लिखी गई एक कविता हम इस अंक में दे रहे हैं।

गहरी सामाजिक प्रतिबद्धता के चलते किशोर अपने सांस्कृतिक मंच 'तूलिका संवाद' के माध्यम से हर जगह मौजूद रहते। चाहे फिर भोपाल गैस त्रासदी हो, नर्मदा बचाओ आंदोलन हो, आदिवासी किसान संघर्ष मोर्चा हो या फिर एकलव्य के विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम के बंद होने पर हुआ विरोध प्रदर्शन हो।

निसंदेह वे अब भी अपनी तूलिका के रूप में हमारे बीच हर वक्त मौजूद रहेंगे।

किशोर को चकमक का लाल सलाम!

● **राजेश उत्साही**

व्यंग्य लेख

मैं आज एक डॉक्टर हूँ तथा लेखक भी, परन्तु बचपन में मैं न तो डॉक्टर बनना चाहता था, न ही लेखक। बचपन में मैं न जाने क्या-क्या बनना चाहता था। आज मैं आपको बचपन की उन अजीब तथा मज़ेदार इच्छाओं के विषय में बताऊँगा।

जो मैं नहीं बन सका

- ज्ञान चतुर्वेदी



मुझे जहाँ तक याद आता है, सबसे पहले जिस व्यक्ति से मैं बुरी तरह प्रभावित हुआ था, वह हमारे गाँव की एकमात्र फट्टा टॉकीज़ का गेटकीपर था। हमारे गाँव में टॉकीज़ नई-नई खुली थी और लम्बी ज़ुल्फोंवाले गाँव के नौजवान गेटकीपर बन गए थे। मैं तब कक्षा पाँच का विद्यार्थी था। मैंने अपने पिद्दी जीवन की पहली टॉकीज़ देखी थी और मैं उसका दीवाना हो गया था। मैं स्कूल से भागकर टॉकीज़ पर घण्टों खड़ा रहता और नई फिल्म के बोर्ड बनते देखता रहता। तब मैं गेटकीपर के अलावा जिस हस्ती पर कुर्बान था वह फिल्म के बोर्ड बनाने वाला पेंटर था। फिल्म हर दो-तीन दिन में बदल जाती थी, सो पेंटर लगभग प्रतिदिन वहाँ बैठा पोस्टर बनाता रहता था। मैं उसकी किस्मत पर रश्क करता और सोचता कि मैं भी बस जीवन-भर बोर्ड बनाऊँगा। क्या मस्त जीवन है! बोर्ड बनाओ और दिन-भर टॉकीज़ पर रहो। परन्तु बाद में मैंने उसी पेंटर को टॉकीज़ के मैनेजर के सामने दस रुपए एडवांस के लिए गिड़गिड़ाते देखा, तो उस दिन से मेरा भ्रम उसके विषय में टूट गया। मैंने तय किया कि मैं पेंटर नहीं बनूँगा। तब तक यूँ भी मेरी नज़र गेटकीपरी के भव्य धन्धे पर पड़ चुकी थी।

मुझे लगता कि ज़िन्दगी तो बस गेटकीपर की है, शेष मनुष्य तो पशुओं-सा जीवन जी रहे हैं। गेटकीपर की भी क्या शान है! तीनों शो मुफ्त फिल्म देख रहे हैं। मुझे यह बात किसी ईश्वरीय वरदान की भाँति लगती थी कि कोई मनुष्य तीनों शो में रोज़ फिल्म देखे। मैंने तय कर लिया कि मैं जीवन में गेटकीपर बनकर ही रहूँगा। इधर मेरी पढ़ाई चौपट हो रही थी, उधर मैं फटेहाल-सा बनकर स्थानीय लक्ष्मी टॉकीज़ के मैनेजर से मिल रहा था। उस बेचारे ने मुझे अनाथ समझकर, शामवाले शो के लिए मुझे गेटकीपर रख लिया। दूसरे ही दिन जिस आदमी का पहला टिकट मुझे फाड़ने का अवसर मिला, वह और कोई नहीं स्वयं मेरे पूज्य पिताजी थे। उन दिनों पिताओं के बीच, अपने बच्चों को पीटने का जबरदस्त रिवाज़ था। पिताजी ने मुझे मारा, मैनेजर को मारा, दो गेटकीपरों को मारा और मारते-मारते मुझे घर लाए। टॉकीज़ का मैनेजर मेरे पिताजी से क्षमा माँगता रहा कि उसे पता नही था कि यह सरकारी अस्पताल के डॉक्टर साहब का लड़का था।

इसी चक्कर में मैं छठी की छमाही परीक्षा में फेल हो गया, जिसके उपलक्ष्य में मेरी और पिटाई हुई। इस प्रकार गेटकीपरी का भूत मेरे सर से उतरा।

मैंने अब पढ़ाई में मन लगाया। धीरे-धीरे मुझे लगने लगा कि मुझे हेडमास्टर बनना चाहिए। दुनिया का सबसे रुआबदार धन्धा यही लगने लगा मुझे। अधिक काम भी नहीं। बस, सुबह-सुबह प्रार्थना के समय मूँछ लगाकर बच्चों के सामने खड़े हो जाओ, प्रार्थना के बाद दस-बारह बच्चों को तबीयत से झापड़ रसीद करो और अपने कमरे में बैठ जाओ। बीच-बीच में कमरे से निकलकर पुनः इस - उस क्लास में घुसकर बच्चों पर घातक हमले करो और शाम की घण्टी बजते ही छाता उठाकर रास्ते के बच्चों को मारते हुए घर चले जाओ। मैंने तय कर लिया कि ज़िन्दगी में हेडमास्टर ही बनना है। यही सोचकर मैं नकली मूँछों की तलाश में बाज़ार में घूमने लगा और पिटाई की प्रैक्टिस अपने छोटे भाइयों पर करने लगा। परन्तु इसी बीच एक बार ज़िला शिक्षाधिकारी ने अपने दौरे पर हम लोगों के सामने ही हेडमास्टर साहब को ऐसा फटकारा कि मेरा सारा उत्साह भंग हो गया।

मैंने अब हेडमास्टर बनने की इच्छा त्यागी और स्कूल की घण्टी बजानेवाला चपरासी बनने की ठानी। मैंने सोचा कि अब तक मैं बेकार ही भटकता रहा। अरे, ज़िन्दगी तो इसकी है। जब चाहा घण्टी बजाकर स्कूल की छुट्टी करा दी। बाकी टाइम बैठकर बीड़ी या सिगरेट पीते रहे। मुझे लगता कि इस धन्धे में बीड़ी पीने से कोई नहीं रोकेगा, वरना तो एक बार मैं छिपकर पिताजी की सिगरेट पी रहा था, तो उन्होंने पकड़ लिया था और मारपीट पर उतर आए थे। तब मेरी समझ में नहीं आता था कि जो चीज़ पिताजी इतने शौक से पीते थे, उसे हमें



मना क्यों करते थे। (वो तो बाद में पिताजी को दिल का दौरा पड़ा तब सिगरेट की हानियाँ समझ में आईं।) खैर, तो मैं इतने लाभों को देखते हुए घण्टी बजानेवाला चपरासी होना चाहता था। परन्तु एक दिन मैंने देखा कि घण्टीवाले को नौकरी से निकाल दिया गया क्योंकि उसकी नौकरी बीस वर्ष के बाद भी कच्ची थी, और उसकी जगह एक नया आदमी आ गया जो हेडमास्टर साहब के घर मुफ्त में पानी भरा करता था। बड़ा रोया वह, पर किसी ने न सुनी उसकी। मेरा एक और सपना टूटा।

मुझे तब लगने लगा कि यदि मैं पहलवान होता, तो ऐसा अन्याय करनेवालों की चटनी बना देता। परन्तु मैं बहुत ही दुबला-पतला था उन दिनों। हम पिकनिक पर जाते तो मैं बनियान या कमीज़ पहनकर ही नदी में नहाने के लिए उतर जाता क्योंकि मेरी सींकिया काठी को देखकर मित्र हँसते थे। फिर भी मैंने शरीर बनाने की तरफ कोई ध्यान न दिया होता यदि तभी मेरे दादाजी गाँव से न आए होते। वे अंग्रेज़ों के समय के कड़ियल, रिटायर्ड पुलिस ऑफिसर थे। उनके कहने से मैंने सुबह-सुबह चने खाकर दौड़ने की ठानी। अफवाह यह थी कि ऐसा करने से भी व्यक्तित्व पहलवानी हो जाता है। मैं दो दिन तो

ठीक-ठाक दौड़ लिया। तीसरे दिन एक मरियल-सा, परन्तु फुर्तीला कुत्ता मेरे पीछे दौड़ने लगा। उसने मेरे से प्रेरणा ली या उसके दादाजी भी पुलिस में जासूसी कुत्ता रहे थे, कह नहीं सकता। मैं कुत्ते से बचने के लिए उस दिन बहुत दौड़ा और शायद और दौड़ता रहता यदि सड़क से सटा हुआ वह गड्ढा न होता। कुत्ता कुछ मज़ाकिया भी था। वह गड्ढे के किनारे तक आकर मुँह बनाकर भौं-भौं करके हँसता रहा और वापस चला गया। मैं राणा साँगा की तरह यहाँ-वहाँ से घायल हो गया। लँगड़ाते हुए घर लौटने में मैंने तय किया कि पहलवानी में शरीर के तोड़फोड़ के कई अवसर रहते हैं। मैं तोड़फोड़ के खिलाफ था। मैंने पहलवान बनने के इरादे त्याग दिए।



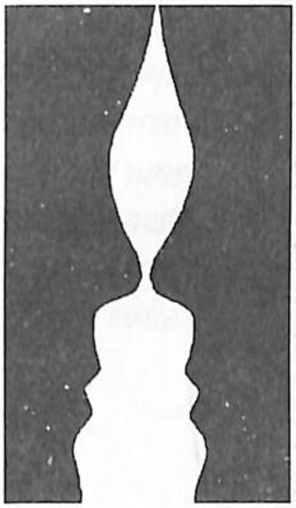
इसी बीच गाँव में मेला लगा और उसमें एक जादूगर के खेल के बड़े चर्चे होने लगे। मैंने पहलवानी की याद में घावों पर मलहम का लेप लगाया और जादूगर का खेल देखने तम्बू में घुस गया। वाह, क्या खेल था! मैने तड़ाक से तय कर डाला कि मुझे जीवन में जादूगर ही बनना है। बढ़िया चमकीली शेरवानी पहनकर रंगीन छींटदार साफा लगाए वह जादूगर जादू की छड़ी पानी के गिलास पर घुमाकर चुर्रेट बोलता और पानी की चाय बन जाती। उसने चुर्रेट बोल-बोलकर कागज के नोट बनाए, लड़के को बकरा बनाया, लड़की को हवा में उड़ाया, खाली हाथ में हवा से लड्डू पैदा किया और खाली डिब्बे में से कबूतर निकाले। मैं अभिभूत हो गया। यह हुई न बात। मैं उस दिन चुर्रेट बोलता हुआ घर वापस आया। स्कूल में हेडमास्टर साब का कमरा खाली पाकर मैंने उनकी मेज़ से चमकीली काली छड़ी उठा ली, जिसकी मार द्वारा वे बिना चुर्रेट बोले ही हम लोगों को मुर्गा बनाया करते थे। मैं छड़ी लेकर सुबह-सुबह जागूदर के तम्बू पर जा पहुँचा। सोचा था कि उनसे प्रार्थना करूँगा कि मुझे भी जादू सिखा दें। जादू सीखकर मैं हेडमास्टर साब को बकरा बनाना चाहता था। मैंने तम्बू में झाँककर देखा। जादूगर अपने लड़के को डाँट रहा था कि पैसे की इस कदर तंगी है और तू लड्डू खरीदकर पैसे फूँक आया। मैले-कुचैले कपड़ों में टूटी खाट पर पड़े उस जादूगर को रुपयों के लिए रोते देखकर मैं दंग रह गया। जो शख्स कागज़ से रुपए तथा हवा से मिठाई बना लेता हो, उसकी यह दुर्दशा! मुझे वास्तविकता के इस कठोर संसार ने गहरा धक्का पहुँचाया और मेरा यह सपना भी टूटा।

इसके बाद जैसे-तैसे मैं बड़ा हुआ, तो मैंने जीवन को बहुत पास से देखा। इसके असर से मैंने कविताएँ तथा कहानियाँ लिखनी शुरू कर दीं। मैंने तय किया कि मैं लेखक बनूँगा। परन्तु आज भी जब मुझे याद आता है कि मैं बचपन में इन सबके अलावा बस ड्राइवर, हलवाई, दर्ज़ी, सड़क कूटनेवाले इंजिन का इंचार्ज, थानेदार, नौटंकी का डांसर, सर्कस का जोकर, आइसक्रीम बेचनेवाला आदि-आदि सब कुछ एक साथ बनना चाहता था तो बड़ी याद आती है अपनी किशोर उम्र की। क्या दिन थे वे भी। ●

छुपम | ईपाछु



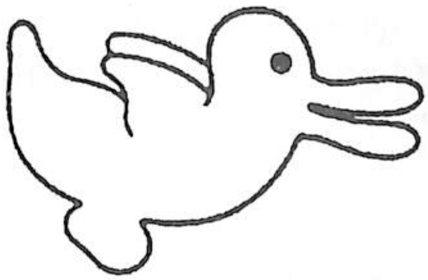
ये साहब बहुत दुखी हैं क्योंकि इनकी बेटी खो गयी है। क्या तुम बेटी को ढूँढने में इनकी मदद कर सकते हो?



चंगू और मंगू में झगड़ा हो गया। चंगू कहता है चित्र में मोमबत्ती है। मंगू कहता है दो चेहरे। तुम्हें क्या लगता है?



जादूगर का खरगोश खो गया है। तुम ढूँढ सकते हो?

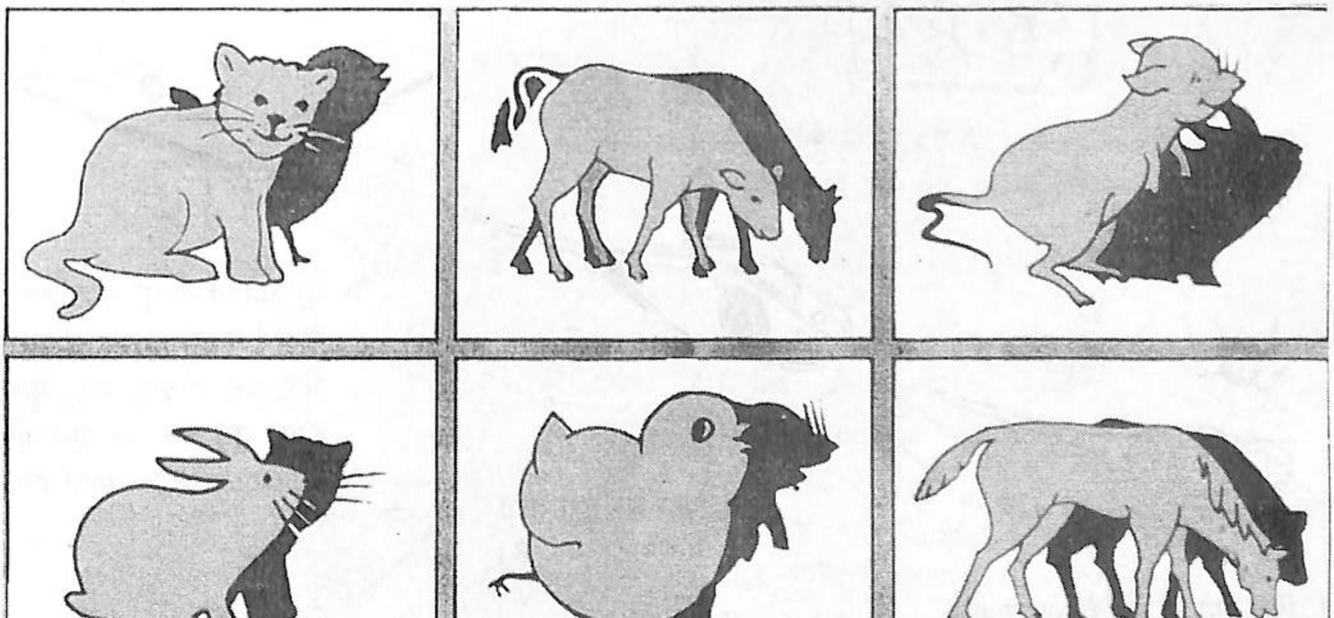


क्या तुम इस बतख को खरगोश बना सकते हो?



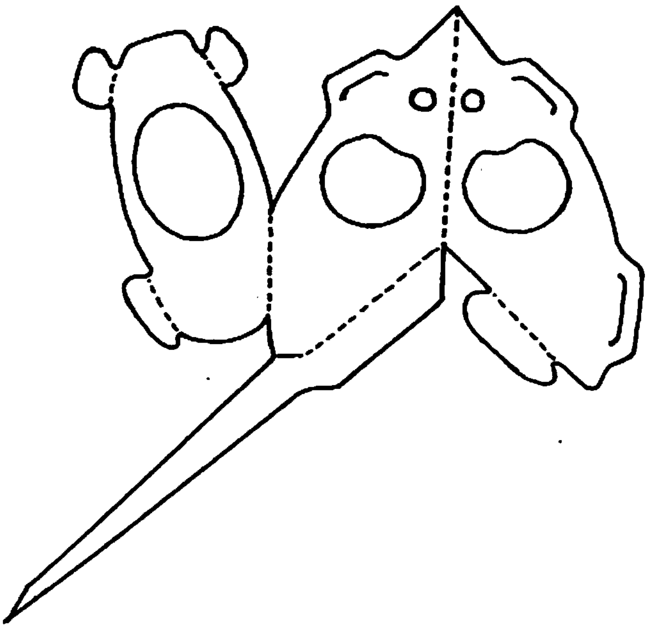
यह चित्र किसका है? सूअर का या गंजे आदमी का? ध्यान से देखो।

- हेण्ड्स ऑन से साभार

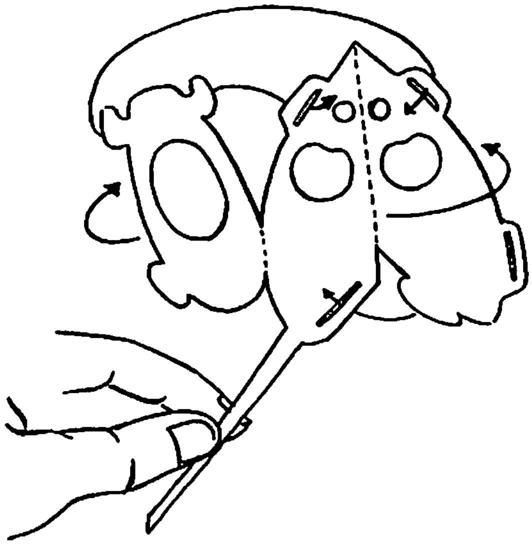


पशुओं की छायाएँ बदल गयी हैं। क्या तुम हरेक की सही छाया ढूँढ़ सकते हो?

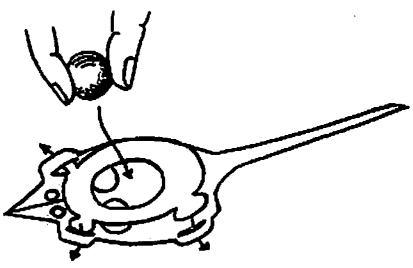
कँचे वाला चूहा



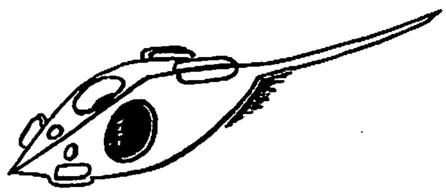
1. पहले चूहे के स्टेंसिल को एक कार्डशीट या फिर पुराने पोस्टकार्ड पर उतारो। चूहे को बाहरी लाइन पर काटो। किसी ब्लेड या चाकू से चूहे के अन्दर के दो गोले और एक अण्डाकार आकृति को भी काटो।



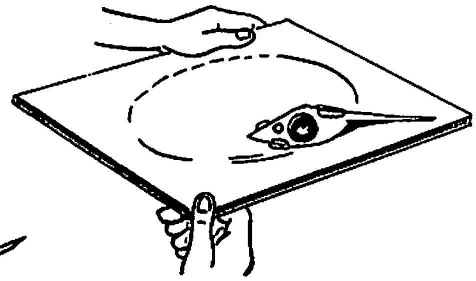
2. चार झिरियाँ काटो। मॉडल को बिंदी वाली लाइनों पर मोड़ो। कानों को झिरियों में फँसाओ; तुम चाहो तो उन्हें चिपका भी सकते हो। इस प्रकार चूहे का रूप उभर कर आएगा।



3. फिर चूहे के पेट के अण्डाकार छेद में एक कँचा डालो।



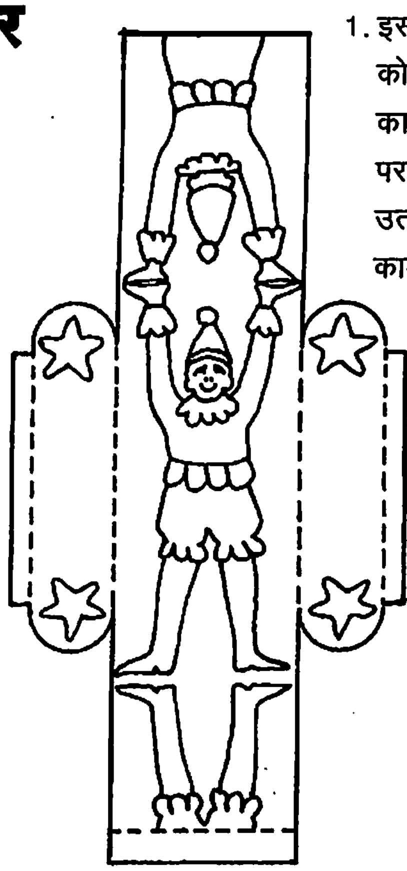
4. चूहा अब पूरी तरह बन कर तैयार है।



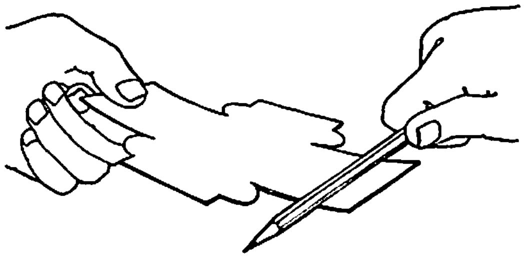
5. चूहे को किसी पुरानी पत्रिका या बड़े फाइल-कवर पर रखो और वह दौड़ना शुरू कर देगा। तुम चाहो तो चूहे को गोल-गोल दौड़ा सकते हो।

कलाबाज़ जोकर

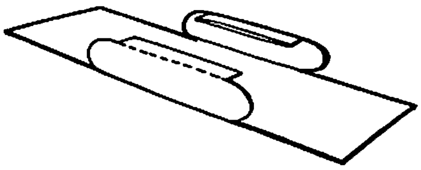
जोकर को कौन नहीं जानता है। जोकर होता ही इतना मज़ेदार इंसान है कि आप लाख संजीदा हों वो आपको ठहाका लगवाकर ही मानता है। उससे हुई एक बार की मुलाकात हम सालों याद रखते हैं। उसे याद रखने का एक और तरीका है उसका मॉडल बनाकर अपने घर में रखना। इसे बनाने के लिए बहुत तामझाम की ज़रूरत भी नहीं। कुछ पुराने कैप्सूल लिए। उसमें साइकिल के पैडिल का बॉल-बेयरिंग डाला और हथेली पर रख दिया। हथेली को आगे-पीछे किया तो यह छोटा जोकर लुढ़कने लगता है।



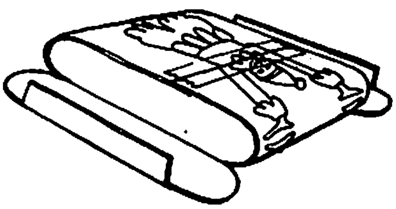
1. इस नमूने को एक कार्डशीट पर उतारकर काट लो।



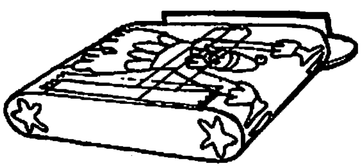
2. इस नमूने को मेज़ पर रखो और उसे पेंसिल से रगड़ो। इससे कार्डशीट का नमूना थोड़ा लचीला हो जाएगा।



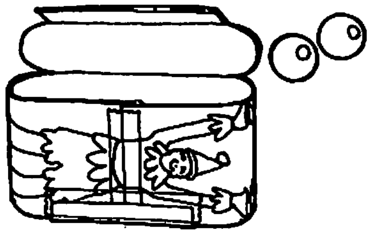
3. बिंदी वाली लाइनों को मोड़कर दो कान बनाओ।



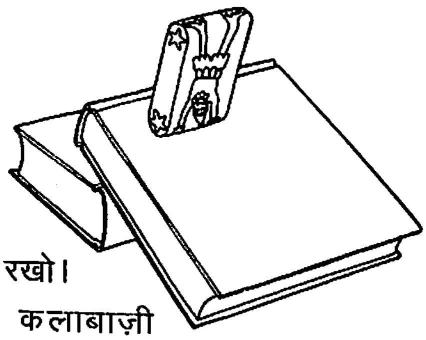
4. फिर नमूने का छल्ला बनाकर उसके दोनों सिरों को अन्दर टेप से चिपकाओ।



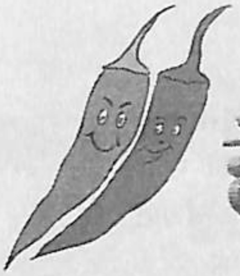
5. अब अंडाकर डिब्बे के एक ढक्कन को अन्दर की ओर चिपकाओ।



6. इस डिब्बे के अन्दर दो कंचे डालो और फिर दूसरे ढक्कन को भी बन्द करके चिपकाओ।



7. अब इस कलाबाज़ जोकर को एक ढाल वाली सतह पर रखो। जोकर फौरन कलाबाज़ी लगाएगा। अगर सतह बहुत चिकनी होगी तो जोकर कलाबाज़ी लगाने की बजाय सिर्फ फिसलेगा। तब आप थोड़ी खुरदरी सतह पर प्रयोग कर



हँसी और सेहत

डॉ. विनय मिश्र



मरीज - डॉक्टर साब क्या मैं बच जाऊँगा?

डॉक्टर - इस बीमारी से दस में से एक ही बचता है। पर चिंता मत करो, मेरे नौ मरीज पहले ही मर चुके हैं।

1 दिन में एक होटल में अपने कुछ दोस्तों के साथ बैठा था। रविवार का दिन था। अचानक पास की मेज़ से हँसने की आवाज़ें आईं। देखा एक परिवार बैठा है, जिसकी दो युवा लड़कियाँ किसी बात पर हँस रही हैं। उनकी हँसी रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। पिता शायद अच्छे मूड में नहीं थे। कुछ देर चुप रहे, फिर बोले - बस, बंद करो हँसना नंदिता। इस हफ्ते के लिए बहुत हँसी हो गई।

मैंने मुँह फेर लिया, ताकि वे मेरी मुस्कराहट न देख सकें। नंदिता बोली, "हँसने दो न पापा! कल तो फिर स्कूल हो जाएगा।"

हँसी पर राशन बाँधने की इस बात ने मुझे मेरे बचपन की याद दिला दी, जब बड़ों के सामने हँसना बदतमीज़ी मानी जाती थी। स्कूल में हँसने पर सज़ा मिलती थी।

खुश रहना हमारा स्वभाव है। बाहर खुश होने के कारण खोजते रहने की बजाय हम खुद अपने भीतर खुशी खोज सकते हैं। शायद हम सोचते हैं कि खुश रहने के लिए तनावमुक्त और आराम की मुद्रा में होना ज़रूरी है। या उसके लिए और बहुत-सी साधन सुविधा ज़रूरी हैं। ऐसा नहीं है। हम बगैर किसी कारण के भी खुश रह सकते हैं। जितना हम बिना बात मुस्कराने, हँसने और खुश रहने का अभ्यास करेंगे, उतना ही हम पाएँगे कि प्रसन्नता का कारण तो हमारे भीतर ही है।

अधिकांश लोग जानते हैं कि हँसी स्वास्थ्य के लिए अच्छी होती है, लेकिन दिक्कत यह है कि



किस बात पर हँसें? चारों तरफ तो ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें देखकर रोना आता है।

हास्य योग

सुबह उठने पर अपने हाथ-पैर, शरीर का पोर-पोर बिल्ली की तरह तानो। कुछ क्षण बाद हँसना शुरू करो। बस, शुरू कर दो। शुरू-शुरू में हँसी लाने के लिए कोशिश करनी पड़ेगी। तो मुँह से 'हा हा हा हा' या 'हा हा हा हा' जैसी आवाज़ें निकालो। कुछ ही देर में सचमुच हँसी आने लगेगी। पाँच मिनिट ऐसा करो। करके देखो। बिना बात हँसो। हँसने के लिए हँसो।

रात को सोते समय पाँच मिनिट फिर ऐसा ही करो। बाथरूम में या साइकिल चलाते समय भी करो। ज़ोर-ज़ोर से भी 'हा हा हा हा' बोलो - जब भी मौका मिले। ऐसा करते ही तुम्हारी तबीयत खुश हो जाएगी।

हमारी सोचने की प्रक्रिया हर समय लगातार चलती रहती है। हम खाली बैठे हों तब भी दिमाग दौड़ता रहता है। हँसी कुछ देर के लिए हमें इससे दूर कर देती है। इससे बहुत आराम मिलता है, थकान दूर हो जाती है और हम ताज़ादम महसूस करने लगते हैं। याद रखो, हमारे भीतर आनन्द उठाने की भरपूर क्षमता है। हँसी हमें याद दिलाती है जीने का यह भी एक खूबसूरत तरीका है।



हँसी क्यों...कैसे?

सवाल है कि हँसी आती ही क्यों है? क्यों नहीं किसी मज़ेदार चुटकले को या वाक़ये को सुनकर हम हाँ हूँ करें और काम में लग जाएँ! क्या है जो गुदगुदाता है और हँसी रोकना हमारे बस में नहीं रहता। बहुत सम्भव है कि तुम कहो इसमें सोचना क्या? हँसी तो आ ही जाती है। (हाँ, ना आए तो सोचना शायद ज़रूरी हो जाए।)

पर यह सवाल तो है ही। और वैज्ञानिकों को तो हँसी का विज्ञान इतना भाया है कि जिलोटोलॉजी नाम की विज्ञान की एक शाखा ही खुल गई है। जवाब की खोज के लिए मस्तिष्क के भीतर झाँका गया और पाया गया कि -

सभी सुनी और देखी चीज़ें सबसे पहले मस्तिष्क के बाएँ हिस्से (सेरिब्रल कॉर्टेक्स) में जाती हैं। यहाँ इनका विश्लेषण यानी जाँच पड़ताल होती है।



मस्तिष्क के सामने का बड़ा हिस्सा (फ्रंटल लोब) सक्रिय हो जाता है। चुटकुले को समझने के लिए ज़रूरी कामकाज मस्तिष्क के दाएँ हिस्से में होते हैं। इसके बाद मस्तिष्क के पीछे की तरफ के हिस्से का काम शुरू होता है। इस हिस्से में (संसरी प्रोसेसिंग एरिया) इन प्राप्त संकेतों के आधार पर अगली कार्यवाही की रूपरेखा तय होती है।

अंतिम चरण में मस्तिष्क का मोटर क्षेत्र सक्रिय हो जाता है। इस क्षेत्र से शरीर के कुछ हिस्सों के हिलने-डुलने को नियंत्रित किया जाता है। यह शरीर को आदेश देता है कि किसी विशेष वाकये पर उसे क्या प्रतिक्रिया ज़ाहिर करनी है। हँसी के नाम पर होठ भर फैलने हैं या हा हा हो हो की ज़ोर-ज़ोर की आवाज़ें भी गूँजें। हँसते-हँसते पेट में बल पड़ने हैं, आँखों को आँसुओं से लबालब करना है या हँसते-हँसते दुहरे होते जाना है...(बेशक बहुत सारी हँसी यहाँ छूट गई होंगी। उन्हें याद कर तुम हँस लेना।)

यानी हँसी को होठों तक लाने में मस्तिष्क के कई हिस्सों की भूमिका है। इस परीक्षण में वैज्ञानिकों ने कई लोगों को तरह-तरह के किस्से सुनाए। इन किस्सों को सुनाने के दौरान वैज्ञानिक उनका ईईजी परीक्षण भी कर रहे थे। इस परीक्षण से मस्तिष्क में चल रही गतिविधियों का पता करते हैं। इसमें दरअसल मस्तिष्क की तरंगों को स्क्रीन पर देखा जाता है। इस परीक्षण में वैज्ञानिकों ने देखा कि किसी मज़ाकिया बात पर तरंगों के पैटर्न में कुछ बदलाव दिखता है जो व्यक्ति के हँसने की प्रतिक्रिया से ठीक पहले ही स्क्रीन पर उभरता है। चूँकि हँसने की क्रिया का रिश्ता मस्तिष्क के कई हिस्सों से है इसलिए उनमें से किसी भी हिस्से में किसी भी गड़बड़ी का असर हमारी हँसी पर पड़ सकता है।



हँसने के फायदे

भई बड़ी काम की चीज़ है यह हँसी। हँसी से शरीर के घाव जल्दी भरते हैं। हँसी से नये काम करने की इच्छा पैदा होती है। हँसी, हँसी को पैदा करती है। किसी को हँसता देख हमें भी हँसी आ जाती है। साथ-साथ हँसने से रिश्ते मज़बूत होते हैं। हँसने से हम दिल खोलकर व्यवहार करते हैं। हँसने से हमें बहुत ज़्यादा सोचते रहने से मुक्ति मिलती है। चीज़ क्या यह तो खुद दवा है। हँसने से शरीर का तनाव कम हो जाता है। कहते हैं हँसने से ट्यूमर और वायरस को खत्म करने वाली कुदरती कोशिकाओं की संख्या बढ़ जाती है। इससे रोगों से लड़ने वाला एक प्रोटीन पैदा होता है। प्रतिरोध क्षमता को बढ़ाने वाली टी-कोशिकाएँ और बी-कोशिकाएँ ज़्यादा बनती हैं। ये कोशिकाएँ रोगों से लड़ने वाली एण्टीबॉडीज़ बनाती हैं।

तुम्हें शायद आश्चर्य हो कि सौ बार हँसना 10 मिनट नाव खेने या 15 मिनट कसरत करने के बराबर होता है। ज़ोर से हँसने से पेट, फेफड़ों, चेहरे, टाँगों और पीठ की माँसपेशियों की पूरी कसरत होती है। तभी तो देर तक ज़ोर से हँसते रहो तो कुछ वैसी ही थकान होती है जैसे कसरत के बाद होती है। हँसने से चेहरे की 15 माँसपेशियों की वर्जिश होती है। ●

कल का विज्ञान



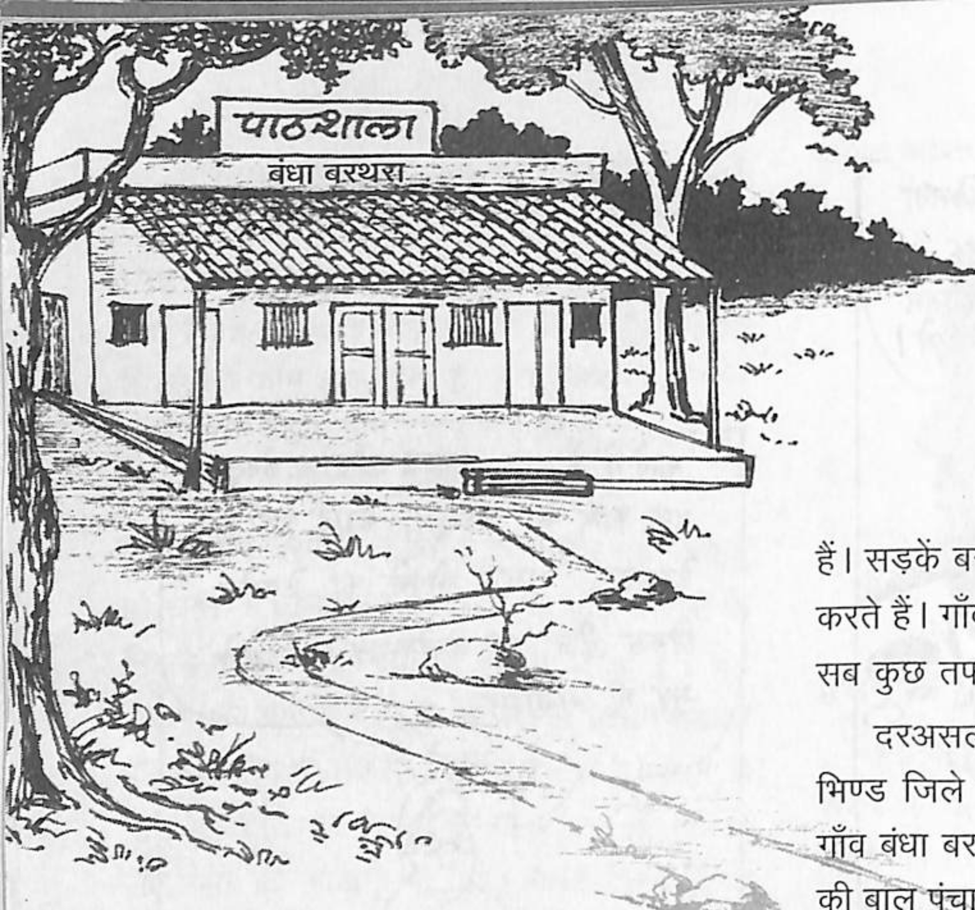


आज की हँसी





व्यंग्य चित्र - आशीष नागरकर



कहानी

कमाल कर रहे बच्चों की

- श्याम बोहरे

अगर तुम्हारे शिक्षक या कुछ बच्चे स्कूल देर से आएँ या न आएँ तो तुम क्या करते हो? किसी से शिकायत करते हो? या कुछ नहीं करते, अगले दिन का इंतज़ार करते हो? एक स्कूल है जहाँ गैर हाज़िर शिक्षक पर बच्चे जुर्माना करते हैं। यह जुर्माना सिर्फ शिक्षक पर ही नहीं होता, अगर कोई छात्र भी बिना किसी उचित वजह के स्कूल नहीं आता तो उसे एक रुपए दिन के हिसाब से जुर्माना भुगतना पड़ता है। सिर्फ इतना ही नहीं, इस स्कूल के बच्चे गाँव में पानी की समस्या का समाधान करते हैं। सड़कें बनवाते हैं। गरीब बच्चों की फीस माफ करते हैं। गाँव के कई फैसले वे लेते हैं। चलो तुम्हें सब कुछ तफसील से बताते हैं -

दरअसल हम बात कर रहे हैं मध्यप्रदेश के भिण्ड जिले की गोहद तहसील के एक छोटे-से गाँव बंधा बरथरा की। ये तमाम कमाल इसी गाँव की बाल पंचायत ने किए हैं। यह बाल पंचायत बंधा बरथरा गाँव के एक मिडिल स्कूल के बच्चों ने बनाई है। इस बाल पंचायत ने कौन-कौन से काम किए ये हम बाद में देखेंगे, पहले इस बाल पंचायत के चुनाव और कामकाज के तरीके के बारे में जानते हैं।

बाल पंचायत में इस स्कूल के पौने दो सौ बच्चों में से सरपंच, उपसरपंच और पंचों का चुनाव होता है। हर कक्षा से दो पंच, एक लड़का और लड़की चुने जाते हैं। ये पंच बाद में सरपंच का चुनाव करते हैं। सरपंच लड़का होगा या लड़की इसका चुनाव एक पर्ची डालकर किया जाता है। पंचायत की बैठक की कार्यवाही को दर्ज़ करने के लिए पंचायत एक सचिव नियुक्त करती है। इस साल इसी स्कूल की एक शिक्षिका को सचिव पद की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है।

इस बालपंचायत ने मुश्किल समझे जाने वाले कई काम कर दिखाए। सबसे पहले तो स्कूल में ऐसे बच्चों की पढ़ाई को मुफ्त किया गया जो फीस

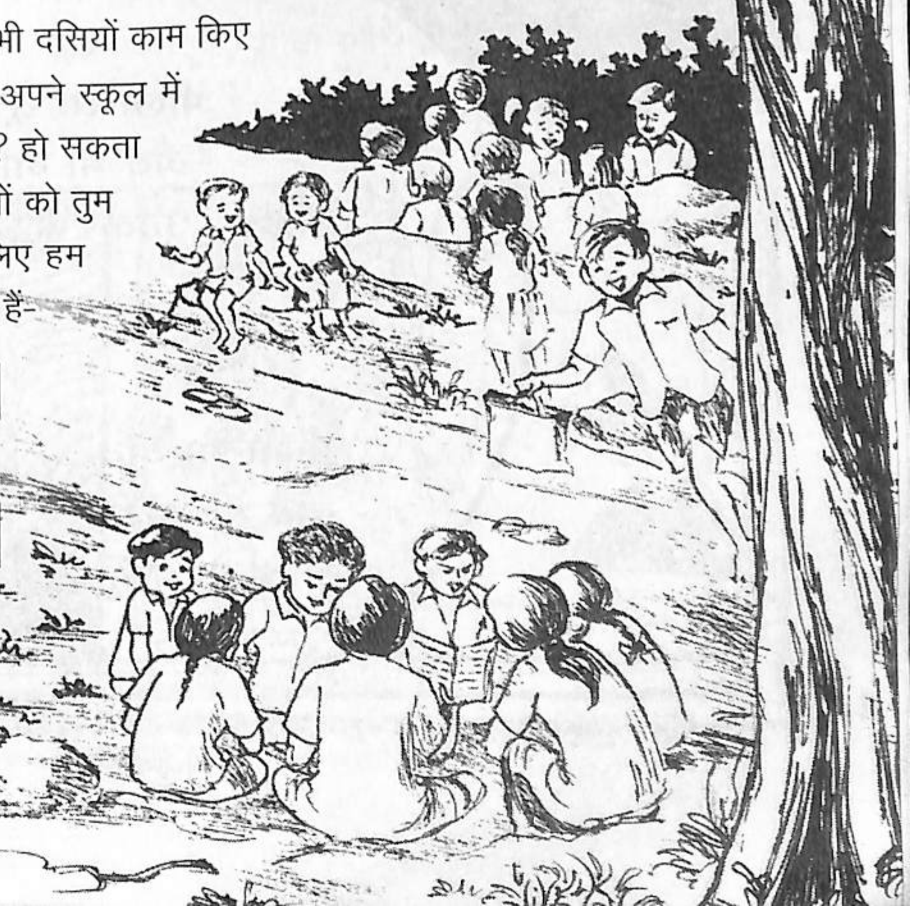
नहीं दे सकते थे। इससे मजदूरी करने वाले दस बच्चे स्कूल आ सके। शिक्षकों व स्कूल से गायब रहने वाले बच्चों पर लेटलतीफी के लिए जुर्माना किया गया। लड़कियों की पढ़ाई के बारे में घर-घर जाकर ज़ोर दिया गया। बालपंचायत की कोशिशों से स्कूल में लड़कियों की संख्या में इज़ाफा हुआ।

गाँव में पानी की बड़ी किल्लत थी। एक बार गाँव में बोरिंग मशीन आई थी। जब वह वापस जाने लगी, सभी जानते थे कि इसे फिर से बुलाना आसान नहीं होगा, बाल पंचायत ने तय किया कि कुछ भी हो गाँव में एक हैण्डपम्प लगना ही चाहिए। रात के कोई एक बजे बैठक बुलाई गई और गाँव के बीच में एक हैण्डपम्प लगवाने का फैसला किया। रात में ही घर-घर जाकर चंदा इकट्ठा किया गया। चालीस हज़ार रुपये इकट्ठा हुए और हैण्डपम्प के लिए बोरिंग हुई। पैसे का प्रबंध गाँव के बुजुर्गों और वयस्क लोगों ने किया। बाल पंचायत ने उन्हें अपनी बैठक में बुलाकर चंदे की राशि और खर्च किए पैसों का हिसाब माँगा। गाँव के बुजुर्गों ने बैठक में आकर यह हिसाब दिया भी।

स्कूल के पास कुछ लोग ताश और जुआ खेलते थे। बाल पंचायत ने जब इसका विरोध किया तो लोगों ने कहा-हमारे बीच में मत बोलो। इस पर बाल पंचायत की सरपंच आरती ने कहा कि यदि यह अच्छा मनोरंजन है तो हमें और अपने बच्चों को भी सिखाइये। आखिरकार लोगों को वहाँ ताश खेलना बंद करना पड़ा।

बाल पंचायत ने इसके अलावा भी दसियों काम किए हैं। तुम्हें क्या लगता है? क्या तुम अपने स्कूल में इस सरीखी पंचायत बनाना चाहोगे? हो सकता है कमाल कर रहे इन हमउम्र दोस्तों को तुम चिट्ठी लिखना चाहो। तो इसके लिए हम इस स्कूल का पता भी यहाँ दे रहे हैं-

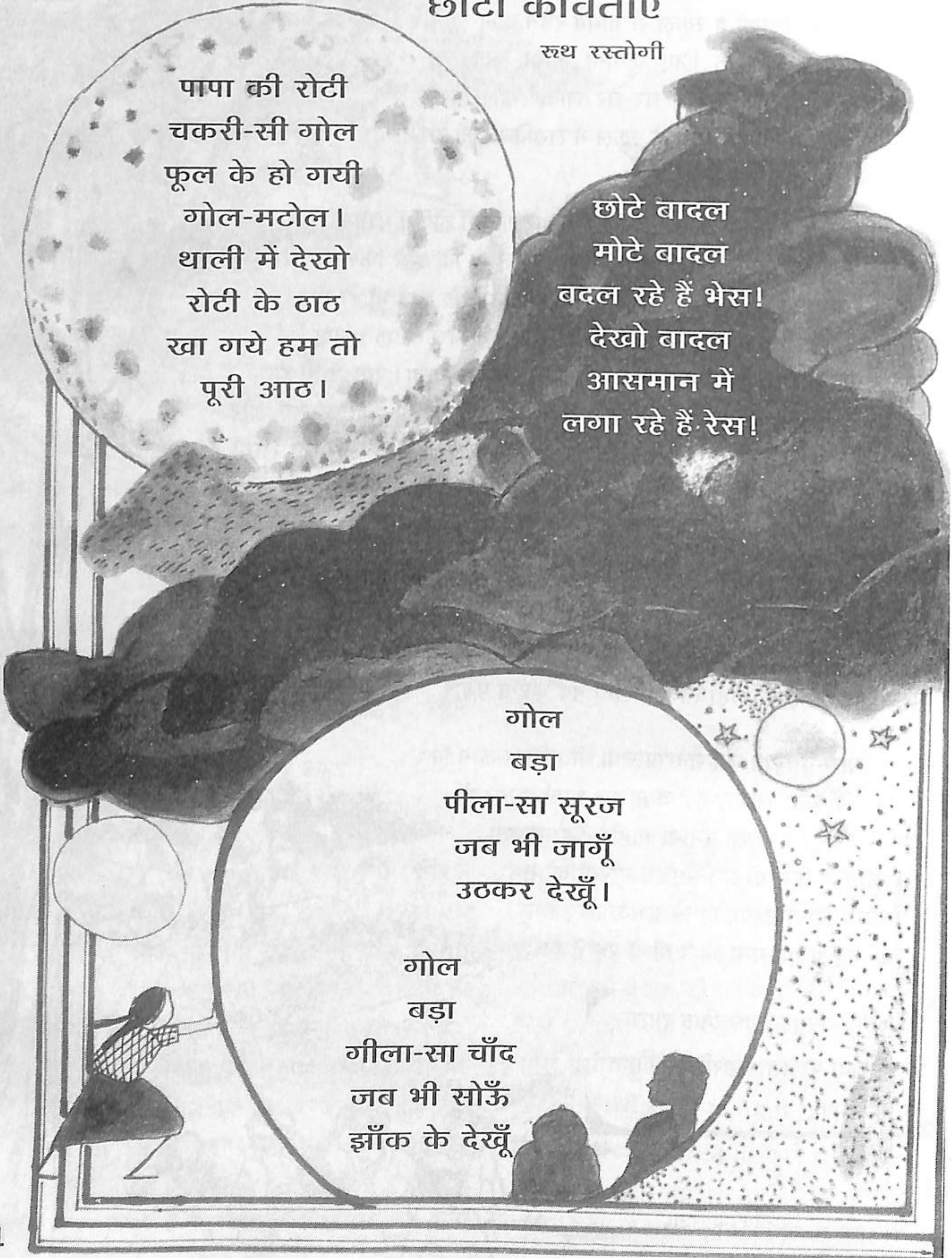
टी.के. मेमोरियल माध्यमिक शाला
ग्राम - बंधा बरथरा, तहसील - गोहद
जिला- भिण्ड, म.प्र.



चित्र-विवेक वर्मा

छोटी कविताएँ

रूथ रस्तोगी



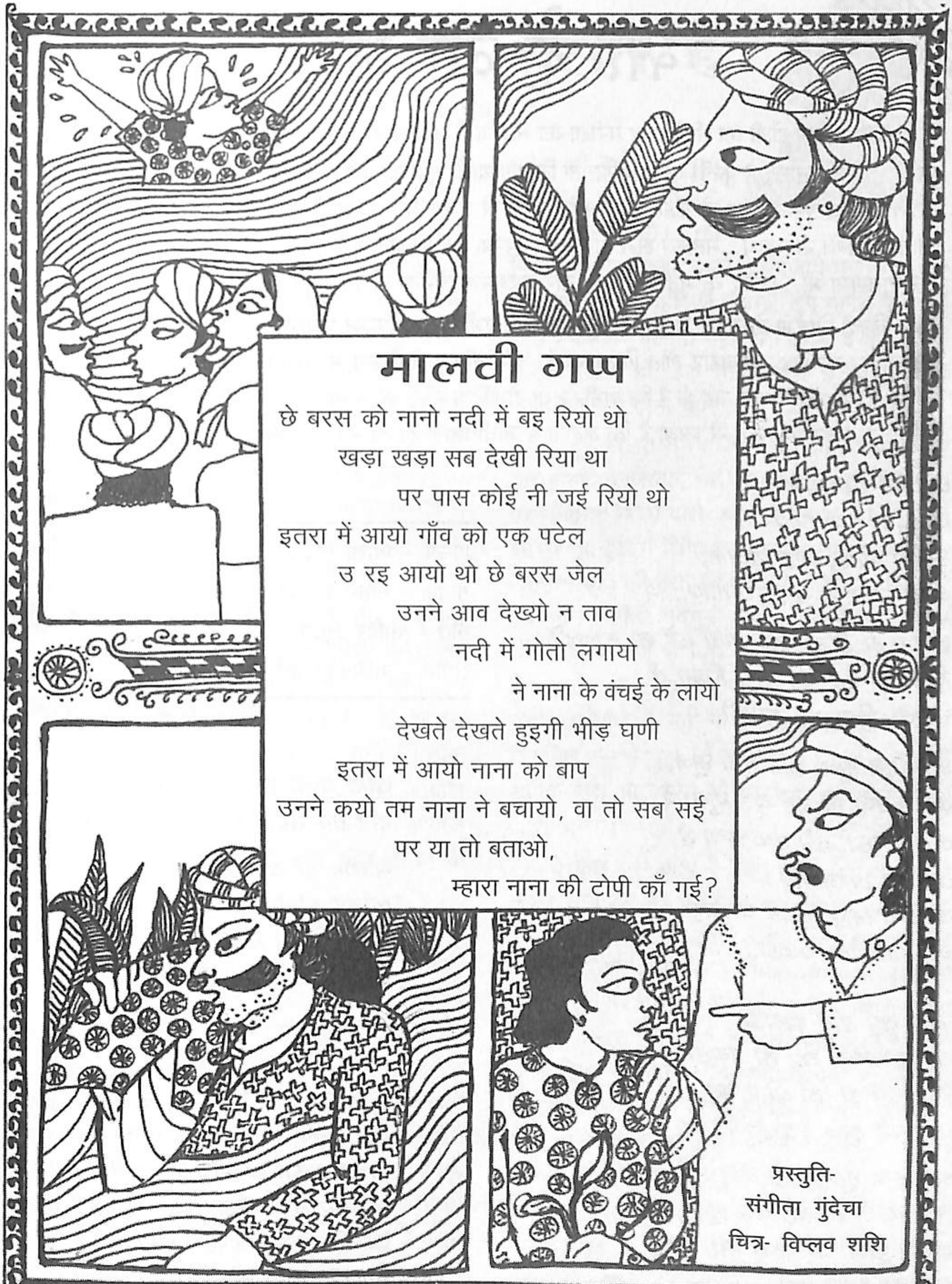
पापा की रोटी
चकरी-सी गोल
फूल के हो गयी
गोल-मटोल।
थाली में देखो
रोटी के ठाठ
खा गये हम तो
पूरी आठ।

छोटे बादल
मोटे बादल
बदल रहे हैं भेस!
देखो बादल
आसमान में
लगा रहे हैं रेस!

गोल
बड़ा
पीला-सा सूरज
जब भी जागूँ
उठकर देखूँ।

गोल
बड़ा
गीला-सा चाँद
जब भी सोऊँ
झाँक के देखूँ
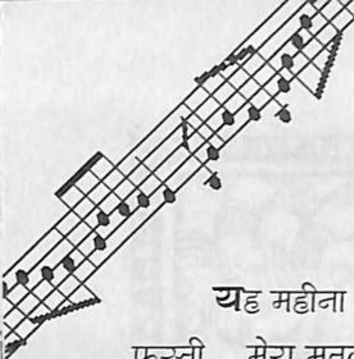
चित्र- विप्लव शशि



मालवी गप्प

छे बरस को नानो नदी में बइ रियो थो
खड़ा खड़ा सब देखी रिया था
पर पास कोई नी जई रियो थो
इतरा में आयो गाँव को एक पटेल
उ रइ आयो थो छे बरस जेल
उनने आव देख्यो न ताव
नदी में गोतो लगायो
ने नाना के वंचई के लायो
देखते देखते हुइगी भीड़ घणी
इतरा में आयो नाना को बाप
उनने कयो तम नाना ने बचायो, वा तो सब सई
पर या तो बताओ,
म्हारा नाना की टोपी काँ गई?

प्रस्तुति-
संगीता गुंदेचा
चित्र- विप्लव शशि



सा रे गा मा

- राजेश उत्साही

यह महीना होली का भी है और परीक्षा का भी। यानी मस्ती। परीक्षा यानी चुस्ती। दोनों के लिए चाहिए फुस्ती... मेरा मतलब है फुर्ती। फुर्ती चाहिए तो दिमाग यानी मुंडा यानी मूड यानी खोपड़ी को दुरुस्त रखना ज़रूरी है। अब इसके लिए तो मोहल्ले की अम्मा दादी से लेकर घर की छोटी नानी अम्मा तक ने तुम्हें नुस्खे बता दिए होंगे। रंगे हाथ...मतलब लगे हाथ एक नुस्खा हम भी बता देते हैं। तुम इसे आज़मा भी सकते हो और गुनगुना भी...। वादे के मुताबिक इस बार कुछ रंग-बिरंगा गीत प्रस्तुत है।

हिन्दी सिनेमा के महान कलाकार गुरुदत्त ने अपनी प्रसिद्ध फिल्म 'प्यासा' में मशहूर हास्य अभिनेता जॉनीवॉकर पर यह सदाबहार गीत फिल्माया है। जॉनीवॉकर ने फिल्म में 'चम्पी' करने वाले का किरदार निभाया है। महत्वपूर्ण बात यह भी है कि गंभीर तथा रोमांटिक गीतों के उस्ताद गायक माने जाने वाले मोहम्मद रफी ने इसे इतनी मस्ती से गाया है कि लगता है जॉनीवाकर ही गा रहे हैं। चलो अब तुम्हारी बारी है....।

फिल्म - प्यासा (1957)
गायक - मोहम्मद रफी
गीत - साहिर लुधयानवी
संगीत - सचिनदेव बर्मन



सर जो तेरा चकराए,
या दिल डूबा जाए
आजा प्यारे, पास हमारे,
काहे घबराए, काहे घबराए....२

तेल मेरा है मुश्की, गंज रहे ना खुश्की
जिस के सर पर हाथ फिरा दूँ
चमके किस्मत उसकी...२

सुन सुन सुन, अरे बेटा सुन,
इस चम्पी में बड़े-बड़े गुन..२
लाख दुखों की एक दवा है
क्यूँ ना आजमाए
काहे घबराए, काहे घबराए
सर जो तेरा चकराए....

प्यार का होवे झगड़ा,
या बिजनिस का हो रगड़ा
सब लफड़ों का बोझ हटे
जब पड़े हाथ इक तगड़ा..२

सुन सुन सुन, अरे बाबू सुन,
इस चम्पी में बड़े-बड़े गुन..२
लाख दुखों की एक दवा है
क्यूँ ना आजमाए

काहे घबराए, काहे घबराए
सर जो तेरा चकराए....

नौकर हो या मालिक,
लीडर हो या पब्लिक
अपने आगे सभी झुके हैं,
क्या राजा क्या सैनिक..२

सुन सुन सुन, अरे बाबू सुन
इस चम्पी में बड़े-बड़े गुन
सुन सुन सुन, अरे राजा सुन
इस चम्पी में बड़े-बड़े गुन
लाख दुखों की एक दवा है
क्यूँ ना आजमाए
काहे घबराए, काहे घबराए
सर जो तेरा चकराए....



पशु भी हँसते हैं

डॉ. शुभ्रा गुहा



हँसी भी क्या चीज़ होती है! कौन होगा जो हँसना न चाहता होगा। है न! जानवरों के बारे में सोचो, क्या वे भी हँसते होंगे? कभी किसी जानवर को देखकर तुम्हें लगा है कि वह बहुत खुश है या हँस रहा है? जब तुम अपनी गाय, कुत्ते या बिल्ली वगैरह को लाड़ करते हो तो वे खुश होते-से दिखते हैं। कुत्ते भी उनको लाड़ करते समय पूँछ हिलाने लगते हैं। पर क्या जानवर हँसते भी होंगे? वैज्ञानिक मानते हैं कि कुछ जानवर अपनी खुशी को ज़ाहिर करने के लिए खास तरह की आवाज़ निकालते हैं। ये आवाज़ें असल में उनकी हँसी होती है। अगर हम ध्यान से सुनें तो ये आवाज़ें हमें अपनी हँसी जैसी ही लगेंगी।

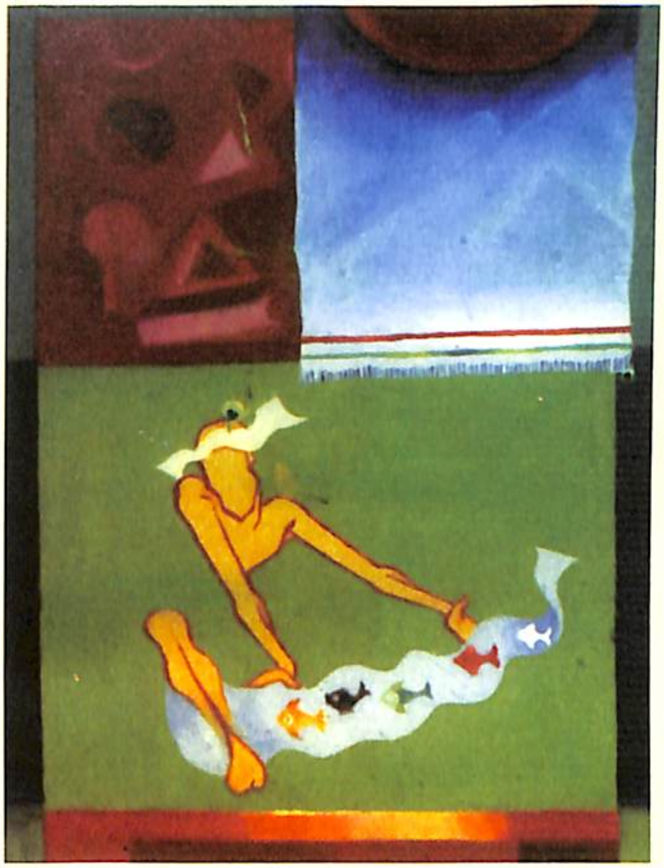
चिम्पांजी जब बहुत खुश होते हैं तो उछलकूद करते हैं। आपस में एक-दूसरे का पीछा करते हैं। गुदगुदी करते हैं। जब वे बहुत उत्साह में होते हैं तब भी हा, हा, हा की आवाज़ निकालते हैं। जब ये इस तरह हँसते हैं तो इनकी धड़कनें बढ़ जाती हैं। ठीक इसी समय वे एक और विचित्र किस्म की आवाज़ निकालते हैं। यह दरअसल उनके हाँफने की आवाज़ होती है। ये आवाज़ें साँस लेने और साँस छोड़ने के दौरान ही सुनाई देती हैं।

कुत्ते भी खास तरह की आवाज़ों द्वारा अपनी खुशी ज़ाहिर करते हैं। इसे हम उनकी हँसी मान सकते हैं। इन खास ध्वनियों के द्वारा ही वे अपने दोस्तों को खेलने के लिए आमंत्रित करते हैं। कुत्तों की सुनने की क्षमता बहुत अधिक होती है। इसलिए वे आपस में इन आवाज़ों के संदेश समझ जाते हैं। कुत्तों की इसी ध्वनि पर काम कर रही पेट्रीशिया सिमोनेट कहती हैं कि कुत्तों की ये खास ध्वनियाँ या आवाज़ें हमें सुनाई नहीं देती हैं। इन्हें कुछ खास यंत्रों के ज़रिए ही सुना जा सकता है। सिमोनेट ने कुत्तों की इन आवाज़ों को रिकार्ड किया। और फिर जब इस रिकार्ड को करीब दो महीने के कुत्ते के पिल्लों को सुनाया गया तो वे खेलने लगे। इन्हीं पिल्लों के सामने जब दूसरे टेप बजाये गए तो उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। अगर तुम अपने कुत्ते को खेलने के लिए बुलाना चाहते हो तो ही ई ई, ही ई ई करके देखो। हाँ, इस ध्वनि में में ई ई का स्पष्ट उच्चारण नहीं होना चाहिए।

चूहे खेलते समय चीं चीं की आवाज़ करते हैं। यह हमारी खिसियाई हँसी के जैसी ही होती है। इन पर अध्ययन करने वाले कहते हैं कि इनकी हँसी का रहस्य गुदगुदी में छिपा है। पेंकसेप नामक व्यक्ति - जिन्होंने चूहों की हँसी पर शोध किए हैं - ने जब चूहों की गर्दन के पीछे गुदगुदी की तो चूहों ने खुश होकर चींची की आवाज़ कीं। हाँ लेकिन वे यह भी मानते हैं कि इसके लिए आपको पहले उस चूहे से दोस्ती करनी पड़ेगी। वे यह भी कहते हैं कि अगर आप नियमित रूप से चूहों को गुदगुदी करेंगे तो वे खुद ही आपके पास आ जाएँगे और आपसे और गुदगुदी की आशा करेंगे।

ये कुछ ऐसे जीव हैं जिन पर उनके हँसने को लेकर शोध हुए हैं। इसका मतलब ये तो नहीं है कि सिर्फ इतने जानवर ही हँसते होंगे? कहते हैं हाथी और व्हेल आदि जानवर भी हँसते हैं। अब तुम अपने आसपास के जानवरों पर गौर करना। जानने की कोशिश करना कि जब वे खुश होते हैं तो कैसा व्यवहार करते हैं। जैसे तुमने देखा होगा गाय के बछड़े अपनी माँ का दूध पीकर खूब उछलकूद करते हैं। बिल्ली हमारे आसपास आसानी से दिख जाती है। देखना, बिल्ली जब खुश होती है तो क्या करती है?

कुछ मज़ेदार चीज़ें पता चलें तो हमें ज़रूर लिखना। हम **चकमक** के ज़रिए उन्हें तुम्हारे अन्य दोस्तों तक पहुँचाएँगे। ●





दोनों चित्र - किशोर उमरेकर

उसकी उम्मीद

(चित्रकार मित्र किशोर उमरेकर के लिए)

किशोर उमरेकर ने बनाये हैं
कागज़ के कबूतर
उनके उड़ने लायक
शान्ति भरा आकाश नहीं है
फिर भी अपने प्रयत्न पर
विश्वास रखता है वह
छल-बल से भरी दुनिया में
जब वह रखता है
कन्धे पर हाथ
तो महसूस होती है
प्यार की ताकत
निराशा से भरकर
जब क्रोधित होता हूँ
अपने आसपास पर
तो वह निराशा को आशा से
और क्रोध को करुणा से भर देता है
नाउम्मीदी के दिनों में
अपने कैनवस पर
सबसे उम्मीद के रंग भरवाता है
दुर्लभ मिट्टी का बना है किशोर
जो उसके लिए ही कम पड़ गयी।

– महेन्द्र गगन

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2005-08



रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रा